द शूटर

सूरजपुर जिले से प्रकाशित प्रथम हिन्दी दैनिक

प्रधान संपादक- रूपेश दुबे: 9826169678
संपादक- प्रवीण दुबे: 9165083700

वर्ष-14 अंक-165 | प्रतापपुर, जिला- सूरजपुर छ.ग. से प्रकाशित | शनिवार 01 अगस्त 2026 | पृष्ठ-8 | मूल्य- 2 रूपये

रोल मॉडल स्कूल की हकीकत : शिक्षक और भृत्य की कमी से जूझ रहा पीएम श्री स्वामी आत्मानंद विद्यालय, बच्चों की पढ़ाई से लेकर स्वच्छता तक पर संकट

रामानुजनगर, 31 जुलाई 2026, द शूटर।
सरकारी विद्यालयों को निजी स्कूलों के समकक्ष सुविधाएं उपलब्ध कराकर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देने के उद्देश्य से शुरू की गई पीएम श्री स्वामी आत्मानंद उत्कृष्ट विद्यालय योजना से लोगों को बड़ी उम्मीदें थीं। लेकिन रामानुजनगर का पीएम श्री स्वामी आत्मानंद उत्कृष्ट अंग्रेजी माध्यम विद्यालय इन दिनों उन उम्मीदों के बिल्कुल विपरीत तस्वीर पेश कर रहा है। यहां न केवल शिक्षकों की कमी बनी हुई है, बल्कि अब विद्यालय पूरी तरह भृत्य विहीन भी हो गया है। परिणामस्वरूप बच्चों की पढ़ाई के साथ-साथ स्वच्छता, पेयजल और कार्यालयीन व्यवस्था भी गंभीर रूप से प्रभावित हो रही है।सबसे अधिक चिंता की बात यह है कि जिस विद्यालय को भविष्य के लिए आदर्श शिक्षा केंद्र बनाया जाना था, वहीं आज बुनियादी व्यवस्थाओं के लिए संघर्ष करना पड़ रहा है। बच्चे पढ़ाई के लिए स्कूल तो पहुंच रहे हैं, लेकिन उनके सामने साफ-सुथरा और व्यवस्थित शैक्षणिक वातावरण उपलब्ध कराना स्वयं विद्यालय प्रबंधन के लिए चुनौती बन गया है।

संलग्नकरण समाप्त होते ही व्यवस्था लड़खड़ाई

जानकारी के अनुसार, विद्यालय की दैनिक व्यवस्थाओं को संभालने के लिए पहले तीन भृत्यों को संलग्न किया गया था। शासन द्वारा हाल ही में संलग्नकरण समाप्त करने के आदेश जारी होने के बाद तीनों कर्मचारियों को उनकी मूल संस्थाओं में वापस भेज दिया गया। इसके साथ ही विद्यालय पूरी तरह भृत्य विहीन हो गया। अब कक्षाओं की साफ-सफाई, पेयजल व्यवस्था, कार्यालयीन दस्तावेजों का संचालन और अन्य दैनिक कार्य गंभीर रूप से प्रभावित हो रहे हैं।

चार पद स्वीकृत, लेकिन अंग्रेजी माध्यम में एक भी नियमित भृत्य नहीं

दस्तावेजों के अनुसार संस्था में भृत्य के चार पद स्वीकृत हैं, लेकिन जमीनी स्थिति इससे बिल्कुल अलग है। वर्तमान में केवल एक भृत्य कार्यरत है, जिसकी सेवाएं स्वामी आत्मानंद हिंदी माध्यम विद्यालय में ली जा रही हैं। दूसरी ओर अंग्रेजी माध्यम विद्यालय में एक भी नियमित भृत्य पदस्थ नहीं है। ऐसे में विद्यालय प्रबंधन वैकल्पिक व्यवस्था के सहारे किसी तरह संचालन कर रहा है, लेकिन यह व्यवस्था कब तक चलेगी, इसका कोई स्पष्ट जवाब नहीं है।

प्राचार्य ने उच्च अधिकारियों को भेजी जानकारी

विद्यालय के प्राचार्य पी.सी. सोनी ने समस्या की पुष्टि करते हुए बताया कि भृत्य नहीं होने से विद्यालय संचालन में गंभीर कठिनाइयां आ रही हैं। इसकी विस्तृत जानकारी उच्च अधिकारियों को लिखित रूप से भेज दी गई है। साथ ही व्यक्तिगत रूप से मिलकर भी विद्यालय में जल्द भृत्य उपलब्ध कराने का अनुरोध किया गया है, ताकि व्यवस्था सामान्य हो सके।

शिक्षकों की कमी भी बनी बड़ी चुनौती

विद्यालय में पहले से ही शिक्षकों की कमी महसूस की जा रही है। पालकों का कहना है कि जब तक नई नियुक्तियां नहीं हो जातीं, तब तक हिंदी माध्यम विद्यालय के उपलब्ध शिक्षकों से आवश्यकता अनुसार अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों का अध्यापन कराया जा सकता है। उनका कहना है कि कई व्याख्याता ऐसे हैं जिनके पास पूरे दिन में केवल दो या तीन कालखंड ही होते हैं। ऐसे में विद्यार्थियों के हित को प्राथमिकता देते हुए अस्थायी व्यवस्था बनाई जा सकती है।

पालकों की चिंता: कहीं बच्चों का भविष्य प्रभावित न हो जाए

अभिभावकों का कहना है कि विद्यालय की अव्यवस्था का सीधा असर बच्चों के मनोबल और पढ़ाई पर पड़ रहा है। यदि समय रहते शिक्षक और भृत्य की व्यवस्था नहीं की गई तो सरकार की महत्वाकांक्षी योजना का उद्देश्य अधूरा रह जाएगा। उनका आग्रह है कि प्रशासन तत्काल आवश्यक स्टाफ उपलब्ध कराए ताकि बच्चों को स्वच्छ, सुरक्षित और गुणवत्तापूर्ण शैक्षणिक वातावरण मिल सके।

E20 लागू करने की जल्दबाजी क्यों? पहले जनता के सवालों का जवाब दे सरकार- मनोज दुबे

अंबिकापुर।द शूटर।
आम आदमी पार्टी छत्तीसगढ़ के प्रदेश उपाध्यक्ष मनोज दुबे ने ए20 (20 प्रतिशत एथेनॉल मिश्रित पेट्रोल) को लेकर सरकार की तैयारी पर गंभीर सवाल उठाते हुए कहा कि पर्यावरण संरक्षण और ऊर्जा आत्मनिर्भरता के नाम पर ऐसी व्यवस्था लागू नहीं की जा सकती, जिससे लाखों वाहन मालिक असमंजस और आर्थिक चिंता में पड़ जाएं।
उन्होंने कहा कि छत्तीसगढ़ में बड़ी संख्या में लोग 2023 से पहले खरीदे गए दोपहिया और चारपहिया वाहन चला रहे हैं। इन वाहन मालिकों के मन में लगातार यह सवाल है कि क्या उनका वाहन ए20 के लिए पूरी तरह उपयुक्त है? यदि नहीं, तो उसकी जिम्मेदारी कौन लेगा? सरकार ने आज तक इस संबंध में स्पष्ट दिशा-निर्देश, व्यापक जागरूकता अभियान या सहायता व्यवस्था क्यों नहीं बनाई?
मनोज दुबे ने कहा कि सरकार जनता को केवल नई नीति बता रही है, लेकिन उसके प्रभाव, सावधानियों और संभावित तकनीकी आवश्यकताओं पर चुप्पी साधे हुए है। यदि किसी वाहन निमार्ता ने कुछ मॉडलों के लिए विशेष सलाह दी है, तो वह जानकारी गांव-गांव तक क्यों नहीं पहुंचाई जा रही? आखिर आम नागरिक बिना स्पष्ट जानकारी के कैसे निर्णय ले? उन्होंने कहा कि यदि भविष्य में ए20 के उपयोग के कारण किसी वाहन में तकनीकी समस्या आती है, तो उसकी जिम्मेदारी किसकी होगी? क्या सरकार, तेल कंपनियां या वाहन निमार्ता इसकी जवाबदेही लेने को तैयार हैं? इन सवालों पर सरकार को स्पष्ट और सार्वजनिक जवाब देना चाहिए।

आम आदमी पार्टी की मांग है कि

- राज्य सरकार ए20 पर विस्तृत श्वेत पत्र जारी करे।
- सभी वाहन मालिकों के लिए स्पष्ट और सरल दिशा-निर्देश तत्काल जारी किए जाएं।
- प्रत्येक पेट्रोल पंप पर ए20 के उपयोग, उपयुक्त वाहनों और आवश्यक सावधानियों की जानकारी अनिवार्य रूप से प्रदर्शित की जाए।
- पुराने वाहन मालिकों के लिए तकनीकी जांच, परामर्श और आवश्यकता पड़ने पर राहत या सहायता योजना घोषित की जाए।
- जब तक व्यापक जनजागरूकता और आवश्यक तैयारी पूरी न हो, तब तक लोगों को भ्रम की स्थिति में छोड़कर ए20 के प्रचार-प्रसार से बचा जाए।

मनोज दुबे ने कहा कि सरकार नई नीतियां लागू करने से पहले जनता का विश्वास जीते। नीति का उद्देश्य जनता को सुविधा देना होना चाहिए, न कि उन्हें अनिश्चितता और अतिरिक्त आर्थिक बोझ की आशंका में डालना। सरकार को जवाब देना होगा कि ए20 लागू करने से पहले आम नागरिकों के हितों की सुरक्षा के लिए उसने अब तक कौन-कौन से ठोस कदम उठाए हैं।

शराब के नशे में पति बना हैवान, गर्भवती पत्नी की पिटाई से गर्भस्थ शिशु की मौत, बेटे के खिलाफ मां ने ही दर्ज कराई शिकायत

रामानुजनगर, 31 जुलाई 2026 द शूटर।

रामानुजनगर से सामने आई यह घटना सिर्फ एक आपराधिक मामला नहीं, बल्कि इंसानियत को झकझोर देने वाली त्रासदी है। शराब के नशे में एक पति की बेरहमी ने न केवल उसकी गर्भवती पत्नी को गंभीर रूप से घायल कर दिया, बल्कि उसकी कोख में पल रही मासूम जिंदगी भी दुनिया देखने से पहले ही खत्म हो गई। इस दर्दनाक घटना के बीच एक ऐसी तस्वीर भी सामने आई, जिसने मानवता पर भरोसा कायम रखा। बहू पर हुए अत्याचार के खिलाफ एक मां ने अपने ही बेटे के विरुद्ध पुलिस थाने पहुंचकर शिकायत दर्ज कराई और न्याय की मांग में बहू का साथ दिया।जानकारी के अनुसार, रामानुजनगर थाना क्षेत्र के ग्राम नारायणपुर निवासी मनीषा यादव के साथ उसके पति नागेंद्र यादव ने शराब के नशे में गाली-गलौज करते हुए बेरहमी से मारपीट की। आरोप है कि मारपीट इतनी गंभीर थी कि गर्भवती मनीषा का गर्भपात हो गया और उसके गर्भ में पल रहे शिशु की मौत हो गई। घटना के बाद घायल महिला और उसके परिजन न्याय की गुहार लेकर थाने पहुंचे।इस पूरे घटनाक्रम में सबसे संवेदनशील पहलू यह रहा कि आरोपी की मां ने भी अपने बेटे की करतूत का विरोध किया। उन्होंने बहू का साथ देते हुए स्वयं थाने पहुंचकर बेटे के खिलाफ शिकायत दर्ज कराई, जो यह संदेश देती है कि अन्याय के खिलाफ खड़े होने के लिए रिश्तों से पहले इंसानियत का साथ देना जरूरी है।पुलिस ने मामले में कार्रवाई करते हुए आरोपी पति नागेंद्र यादव को गिरफ्तार कर लिया है, मामले की विस्तृत जांच जारी है और आगे की वैधानिक कार्रवाई की जा रही है।

नाबालिगों की सुरक्षा के लिए सड़क पर उतरी सरगुजा पुलिस, अंडरएज ड्राइविंग रोकने विशेष जागरूकता अभियान शुरू

अम्बिकापुर, 31 जुलाई 2026 द शूटर।
तेज रफ्तार और बढ़ती सड़क दुर्घटनाओं के बीच सबसे अधिक चिंता उस समय होती है, जब कम उम्र के बच्चे बिना ड्राइविंग लाइसेंस के वाहन चलाते हुए अपनी ही नहीं, बल्कि दूसरों की जान भी जोखिम में डाल देते हैं। इसी गंभीर चिंता को देखते हुए सरगुजा पुलिस ने नाबालिगों द्वारा वाहन चलाने पर प्रभावी रोक लगाने के लिए जिलेभर में विशेष जागरूकता अभियान शुरू किया है।शासन के निर्देश तथा डीआईजी एवं एसएसपी सरगुजा आईपीएस राजेश कुमार अग्रवाल के मार्गदर्शन में जिले के विभिन्न थाना, चौकी और यातायात पुलिस की टीमें लगातार स्कूलों और कॉलेजों में पहुंचकर छात्र-छात्राओं को सड़क सुरक्षा और यातायात नियमों के प्रति जागरूक कर रही हैं। अभियान का उद्देश्य केवल कार्रवाई करना नहीं, बल्कि बच्चों में जिम्मेदारी की भावना विकसित करना और उन्हें संभावित हादसों से बचाना है।अभियान के दौरान छात्र-छात्राओं को बताया जा रहा है कि बिना वैध ड्राइविंग लाइसेंस वाहन चलाना कानूनन अपराध होने के साथ-साथ जीवन के लिए भी बेहद खतरनाक है। उन्हें हेलमेट पहनने, यातायात नियमों का पालन करने और सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देने की समझाइश दी जा रही है।सरगुजा पुलिस ने जिले के सभी विद्यालयों के प्राचार्यों और प्रधान पाठकों से भी आग्रह किया है कि बिना वैध ड्राइविंग लाइसेंस वाले छात्र-छात्राओं को दोपहिया वाहन से विद्यालय आने की अनुमति न दें। यदि कोई नाबालिग वाहन चलाते हुए पाया जाता है तो सबसे पहले उसके अभिभावकों को बुलाकर काउंसलिंग की जाएगी और सुधारात्मक प्रयास किए जाएंगे। इसके बावजूद स्थिति में सुधार नहीं होने पर मोटर वाहन अधिनियम के तहत चलानी एवं अन्य वैधानिक कार्रवाई की जाएगी।पुलिस टीम ने स्कूलों के बाहर वाहन लेकर आने वाले छात्रों से ड्राइविंग लाइसेंस और हेलमेट की भी जांच की तथा उन्हें स्कूल आने-जाने के लिए अधिकृत स्कूल वाहन या परिजनों के साथ यात्रा करने की सलाह दी।

इसके साथ ही सरगुजा पुलिस ने सभी अभिभावकों से अपील की है कि वे अपने नाबालिग बच्चों को किसी भी परिस्थिति में वाहन चलाने के लिए न दें। एक छोटी-सी लापरवाही किसी परिवार की खुशियां छीन सकती है। पुलिस का यह अभियान आने वाले दिनों में भी लगातार जारी रहेगा, ताकि जागरूकता के माध्यम से सड़कें अधिक सुरक्षित बन सकें और हर बच्चा सुरक्षित अपने घर लौट सके।

नाबालिग आदिवासी बालिका से दुष्कर्म के आरोपी की शीघ्र गिरफ्तारी की मांग, भाजपा अनुसूचित जनजाति मोर्चा ने एसपी को सौंपा ज्ञापन

*** आदिवासी अस्मिता से खिलवाड़ बर्दाश्त नहीं, आरोपी और दबाव बनाने वालों पर कार्रवाई की मांग**

अम्बिकापुर। द शूटर।
भारतीय जनता पार्टी सरगुजा के जिलाध्यक्ष भारत सिंह सिसोदिया के मार्गदर्शन में भाजपा अनुसूचित जनजाति मोर्चा के प्रतिनिधिमंडल ने आज पुलिस अधीक्षक को ज्ञापन सौंपकर नाबालिग आदिवासी बालिका से दुष्कर्म के आरोपी तरुण जायसवाल की तत्काल गिरफ्तारी एवं कठोर कानूनी कार्रवाई की मांग की। साथ ही पीड़ित परिवार पर समझौते का दबाव बनाने वाले लोगों के विरुद्ध भी निष्पक्ष जांच कर उचित कार्रवाई की मांग की गई।
इस अवसर पर भाजपा जिला महामंत्री विनोद हर्ष ने कहा कि नाबालिग आदिवासी बालिका के साथ हुई यह घटना अत्यंत गंभीर एवं दुर्भाग्यपूर्ण है। उन्होंने आरोप लगाया कि आरोपी पक्ष के परिजन पीड़ित परिवार पर लगातार समझौते का दबाव बना रहे हैं। साथ ही उन्होंने कहा कि कांग्रेस के परसा मंडल अध्यक्ष एवं पूर्व सरपंच विवेक पैकरा तथा उनके परिवार के लोगों द्वारा भी पीड़ित पक्ष पर आर्थिक प्रलोभन देकर समझौते के लिए दबाव बनाए जाने की शिकायत सामने आई है। उन्होंने कहा कि यदि ऐसे मामलों में दोषियों के विरुद्ध तत्काल कार्रवाई नहीं होती है तो इससे न्याय व्यवस्था पर लोगों का विश्वास प्रभावित होगा।
अनुसूचित जनजाति मोर्चा के जिलाध्यक्ष बिंदेश्वरी पैकरा ने कहा कि नाबालिग आदिवासी बच्ची से बलात्कार की घटना से हम सब अत्यधिक आक्रोशित एवं उद्वेलित हैं।उन्होंने कहा कि कांग्रेस नेता द्वारा पीड़ित परिवार को पैसा का प्रलोभन दे कर जनजाति अस्मिता के साथ सौदा करने की कोशिश की गई जो बेहद दुर्भाग्यपूर्ण और निंदनीय है , इससे आदिवासी समाज के लिए कांग्रेस का सोच परिलक्षित होता है । बिंदेश्वरी पैकरा ने कहा कि आरोपी तरूण जायसवाल एवं उसके परिवारजन काफी पहुंच एवं प्रभावशाली व्यक्ति है, के द्वारा अपनी पहुंच एवं प्रभाव के आधार पर प्रकरण को कमजोर करने का प्रयास किया जा रहा है। यदि आरोपी तरूण जायसवाल की गिरफ्तारी शीघ्र नही की जाती है तो वह पीड़िता एवं अन्य साक्षियों को प्रभावित कर सकता है।
भाजपा महिला मोर्चा की जिलाध्यक्ष शुभांगी बिहाड़े ने बताया कि महिला मोर्चा का प्रतिनिधिमंडल हाल ही में ग्राम भफौली पहुंचकर पीड़िता एवं उसके परिजनों से मिला था। उन्होंने कहा कि भाजपा महिला मोर्चा इस कठिन समय में पीड़ित परिवार के साथ मजबूती से खड़ा है और उन्हें हर संभव सहयोग एवं न्याय दिलाने के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने कहा कि किसी भी सभ्य समाज में महिलाओं एवं बालिकाओं के विरुद्ध इस प्रकार के अपराध अस्वीकार्य हैं। उन्होंने पुलिस प्रशासन से आरोपी की तत्काल गिरफ्तारी सुनिश्चित करने तथा पीड़िता एवं उसके परिवार पर दबाव बनाने वाले सभी लोगों के विरुद्ध निष्पक्ष एवं कठोर कार्रवाई करने की मांग की।
ज्ञापन सौंपने वालों में महिला मोर्चा प्रदेश महामंत्री फुलेश्वरी सिंह, भाजपा जिला महामंत्री अरुणा सिंह, निलेश सिंह, सत्यम साहू , जन्मेजय मिश्रा, रूपेश दुबे, रविकांत उराँव, प्रियंका चौबे, सरस्वती यादव, अनीश सिंह, अविनाश मण्डल सहित मोर्चा एवं पार्टी के अन्य पदाधिकारी उपस्थित रहे।

योजनाओं के समयबद्ध क्रियान्वयन में लापरवाही बर्दाश्त नहीं - योगेंद्र श्रीवास

*** जनपद बैकुंठपुर में तकनीकी सहायक, सचिवों की समीक्षा बैठक संपन्न**

बैकुण्ठपुर। द शूटर। कलेक्टर कोरिया रोक्तिमा यादव के निदेर्शानुसार जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी योगेंद्र श्रीवास ने आज जनपद पंचायत बैकुंठपुर में सभी तकनीकी सहायक और ग्राम पंचायतों के सचिवों की समीक्षा बैठक ली। बैठक में उन्होंने पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग अंतर्गत संचालित विभिन्न योजनाओं में स्वीकृत कार्यों की ग्राम पंचायत वार समीक्षा कर प्रगति पर आवश्यक निर्देश प्रदान किए। जिला पंचायत सीईओ श्री योगेन्द्र श्रीवास ने सबसे पहले तकनीकी सहायकों के साथ विकसित भारत जीरामजी योजना और उसके साथ प्रधानमंत्री आवास योजना की प्रगति पर स्वीकृत कार्यों की समीक्षा का आंकलन कर आवश्यक दिशा निर्देश प्रदान किए। इसके बाद उन्होंने आजीविका गतिविधियों के विस्तार पर बात की। उन्होंने जनपद पंचायत बैकुंठपुर के सभी ग्राम पंचायत सचिवों से भी कार्य प्रगति पर बात की।इस दौरान जिला पंचायत से योजनाओं के प्रमुख और कार्यक्रम अधिकारी बैकुंठपुर भी उपस्थित रहे।

बालिका शौचालय निर्माण जल्द आरंभ करें

विकसित भारत जीरामजी योजना में बालिकाओं के विद्यालय में बनाए जाने वाले शौचालय निर्माण कार्य को तत्काल आरंभ कराने के निर्देश देते हुए जिला पंचायत सीईओ योगेंद्र श्रीवास ने कहा कि जी राम जी कार्ययोजना में प्रस्तावित प्रत्येक कार्य के तकनीकी प्रस्ताव जल्द तैयार कर ऑनलाइन सिक्योर पोर्टल पर अपलोड करें जिससे जल्द प्रशासकीय स्वीकृति प्रदान की जा सके। उन्होंने योजना के अंतर्गत प्रत्येक ग्राम पंचायत में रोजगार मूलक कार्य की उपलब्धता सुनिश्चित करने के निर्देश देते हुए सभी ग्राम पंचायतों में चल रहे कार्यों की प्रगति पर समीक्षा की। इस दौरान उन्होंने जियो टैगिंग, स्पिल ओवर वर्क, कार्य पूर्णता जैसे महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर अपेक्षित प्रगति लाने के निर्देश दिए।

आवास निर्माण के लिए उचित समय

समीक्षा बैठक में प्रधानमंत्री आवास योजना में प्रगति लाने के निर्देश देते हुए उन्होंने कहा कि अगस्त माह के लिए लक्षित हितग्राहियों से निरंतर संपर्क करें और उनके प्रगतिरत आवास कार्यों को जल्द पूर्ण कराने का लक्ष्य रखें। जिला पंचायत सीईओ ने आवास योजना के तहत किश्तों के आबंटन कार्य उपरांत कार्य की प्रगति के लिए निरंतर हितग्राहियों से संवाद बनाए रखने तथा आवश्यकता अनुसार संसाधन उपलब्ध कराने के निर्देश दिए।

आजीविका गतिविधि जरूरी

जिले में मनरेगा तथा वीबी जीरामजी योजना अंतर्गत बनाई गई प्रत्येक जल संरक्षण की संरचना को आजीविका का संसाधन बनाए जाने की आवश्यकता पर बल देते हुए योगेंद्र श्रीवास ने कहा कि प्रत्येक अमृत सरोवर, नए तालाब, आजीविका डबरी को मछली पालन कार्य के लिए चिन्हित करें तथा महिलाओ को मछली पालन से जोड़ते हुए प्रत्येक जल संसाधन में आजीविका लेयरिंग जल्द पूर्ण कराएं।

जेल में बंदियों को मिला रोजगार का हुनर, 35 बंदियों ने सीखा फास्ट फूड एवं बेकरी निर्माण

बैकुण्ठपुर। द शूटर। जिला जेल बैकुण्ठपुर में निरुद्ध बंदियों के पुनर्वास और उन्हें आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल करते हुए 21 जुलाई से 30 जुलाई 2026 तक कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। यह प्रशिक्षण रूरल सेल्फ एम्प्लॉयमेंट ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट (आरएसईटीआई), बैकुण्ठपुर द्वारा सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया के सहयोग से मुख्यालय जेल एवं सुधारात्मक सेवाएं, छत्तीसगढ़, रायपुर के 'निश्चय कार्यक्रम' के अंतर्गत आयोजित किया गया। प्रशिक्षण का उद्देश्य बंदियों को ऐसा व्यावहारिक कौशल प्रदान करना था, जिससे वे जेल से रिहा होने के बाद स्वरोजगार अपनाकर सम्मानपूर्वक जीवनयापन कर सकें। दस दिवसीय प्रशिक्षण में कुल 35 बंदियों ने भाग लिया और फास्ट फूड एवं बेकरी उत्पाद तैयार करने का व्यावहारिक प्रशिक्षण प्राप्त किया। प्रशिक्षण के दौरान बंदियों को पिज्जा, चाउमीन, मंचूरियन, मोमोज, समोसा, भजिया, फ्रेंच फ्राइज, गुपचुप सहित विभिन्न प्रकार के फास्ट फूड बनाने की विधियां सिखाई गईं। इसके अलावा विभिन्न डिजाइन के केक तैयार करने का प्रशिक्षण भी दिया गया। प्रशिक्षकों ने खाद्य पदार्थों की गुणवत्ता, स्वच्छता, साफ-सफाई, सुरक्षित खाद्य निर्माण, ग्राहक व्यवहार तथा फूड स्टॉल संचालन से जुड़े आवश्यक पहलुओं की भी जानकारी दी। बंदियों को स्वरोजगार शुरू करने में आर्थिक सहायता उपलब्ध कराने के उद्देश्य से बैंक ऋण एवं बीमा योजनाओं की जानकारी भी प्रदान की गई। प्रशिक्षण के माध्यम से उन्हें यह समझाया गया कि कौशल और आत्मविश्वास के बल पर वे रिहाई के बाद अपना छोटा व्यवसाय शुरू कर आत्मनिर्भर बन सकते हैं।

जेल प्रशासन ने बताया कि इस प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रमों का उद्देश्य केवल कौशल विकास नहीं, बल्कि बंदियों के व्यक्तित्व में सकारात्मक परिवर्तन लाना, उन्हें अपराध की दुनिया से दूर रखते हुए समाज की मुख्यधारा से जोड़ना और सम्मानजनक जीवन के लिए तैयार करना है। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के सफल संचालन में सहायक जेल अधीक्षक एस.के. आबिद रजा तथा आरएसईटीआई बैकुण्ठपुर की डायरेक्टर महती बनर्जी की महत्वपूर्ण भूमिका रही। कार्यक्रम को बंदियों के पुनर्वास की दिशा में एक सार्थक एवं प्रेरणादायी पहल माना जा रहा है।

कलेक्टर की पहल से AISECT कॉलेज में कैरियर मार्गदर्शन कार्यक्रम, अधिकारियों ने विद्यार्थियों को दिए सफलता के टिप्स

बैकुण्ठपुर। द शूटर। कलेक्टर रोक्तिमा यादव की पहल "Beyond The ClÔssroom" के तहत बैकुंठपुर स्थित AISECT कॉलेज में कैरियर मार्गदर्शन एवं सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस पहल का उद्देश्य विद्यार्थियों को पढ़ाई के साथ-साथ प्रतियोगी परीक्षाओं, प्रशासनिक कार्यप्रणाली और बेहतर कैरियर की जानकारी देना है। कार्यक्रम में जिला आबकारी अधिकारी रमेश अग्रवाल और श्रम अधिकारी तनुजा माझी ने अपने प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी और साक्षात्कार के अनुभव विद्यार्थियों से साझा किए। उन्होंने बताया कि सही योजना, नियमित पढ़ाई, समय का सही उपयोग और आत्मविश्वास सफलता की कुंजी है। इस अवसर पर हाल ही में चयनित आबकारी उप निरीक्षक अभिषेक कमल और सूरज के साथ आरक्षक महबूब आलम एवं परवीन यादव ने विद्यार्थियों को प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के लिए उपयोगी जनमन पत्रिका और सुशासन संकल्प का वितरण किया। विद्यार्थियों की तैयारी को परखने के लिए वढरउ, उक्ष्ढरउ, व्यापम, बैंकिंग सहित अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं के स्तर पर आधारित 100 प्रश्नों की सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता आयोजित की गई। परीक्षा डटफ शीट पर कराई गई, जिससे विद्यार्थियों को वास्तविक परीक्षा जैसा अनुभव मिला।

प्रतियोगिता में उर्मिला टोप्पो ने प्रथम, वर्षा यादव ने द्वितीय, पूर्णिमा राजवाड़े ने तृतीय, रितेश कुमार ने चतुर्थ और अनीक सिंह ने पंचम स्थान प्राप्त किया। सभी विजेताओं को आकर्षक पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के दौरान अधिकारियों ने विद्यार्थियों से मेहनत, अनुशासन और सकारात्मक सोच के साथ अपने लक्ष्य की तैयारी करने की अपील की। उन्होंने कहा कि सही मार्गदर्शन और लगातार प्रयास से हर विद्यार्थी अपने सपनों को पूरा कर सकता है। कार्यक्रम में बैकुंठपुर के युवा गायक सचिन गुप्ता 'डिम्मी' ने देशभक्ति और प्रेरणादायक गीत प्रस्तुत किए, जिनका विद्यार्थियों ने खूब आनंद लिया। महाविद्यालय के प्राचार्य, प्राध्यापकगण और बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएं कार्यक्रम में शामिल हुए। अंत में नीलेश सोनी, प्रशांत राजवाड़े और अरविंद मिश्रा ने सभी अतिथियों का आभार व्यक्त किया। विद्यार्थियों ने ऐसे कार्यक्रमों को उपयोगी बताते हुए भविष्य में भी इनके आयोजन की अपेक्षा जताई।

शासन के आदेशों के बाद भी नहीं बदली व्यवस्था : वर्षों से छात्रावासों में जमे शिक्षक, स्कूलों में बच्चों की पढ़ाई प्रभावित

सूरजपुर/रामानुजनगर, 31 जुलाई 2026, द शूटर।

सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चों का भविष्य आखिर किसके भरोसे है, यदि शिक्षक वर्षों तक कक्षाओं से बाहर रहेंगे और शासन के आदेशों के बावजूद व्यवस्था नहीं बदलेगी, तो क्या गुणवत्तापूर्ण शिक्षा केवल सरकारी दस्तावेजों और बैठकों तक ही सीमित रह जाएगी..? यह सवाल इन दिनों सूरजपुर जिले की शिक्षा व्यवस्था पर सबसे ज्यादा चर्चा का विषय बना हुआ है। शासन लगातार शिक्षकों को उनके मूल विद्यालयों में वापस भेजने और शिक्षा व्यवस्था को सुदृढ़ करने के निर्देश जारी कर रहा है, लेकिन धरातल पर तस्वीर अब भी अलग दिखाई दे रही है। कई शिक्षक वर्षों से छात्रावासों और अन्य प्रभारों में कार्यरत हैं, जबकि उनके विद्यालयों में पढ़ने वाले छात्र शिक्षक की कमी से जूझ रहे हैं। अब निगाहें जिला प्रशासन और शिक्षा विभाग पर हैं कि वे इस मुद्दे पर केवल आश्वासन देते हैं या वास्तव में बच्चों के हित में ठोस और निष्पक्ष कार्रवाई भी करते हैं।

इसी गंभीर मुद्दे को लेकर जनपद पंचायत ओड़गी की उपाध्यक्ष श्रीमती सुधा देवी तिवारी ने कलेक्टर सूरजपुर को ज्ञापन सौंपकर शिक्षिका अनुपा लकड़ा को तत्काल उनके मूल पदस्थापना स्थल माध्यमिक शाला उमझर, विकासखंड ओड़गी वापस भेजने की मांग की है।ज्ञापन में उल्लेख किया गया है कि अनुपा लकड़ा कई वर्षों से विभिन्न छात्रावासों में प्रभारी अधीक्षक के रूप में कार्यरत हैं और वर्तमान में प्री-मैट्रिक बालिका छात्रावास भुवनेश्वरपुर, विकासखंड रामानुजनगर का संचालन देख रही हैं। इससे उनके मूल विद्यालय में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं की नियमित पढ़ाई प्रभावित हो रही है और लंबे समय से वे शैक्षणिक कार्यों से दूर हैं।ज्ञापन में मांग की गई है कि शिक्षिका अनुपा लकड़ा को तत्काल उनके मूल विद्यालय में पदस्थ किया जाए ताकि विद्यार्थियों की नियमित पढ़ाई संचालित हो सके।

एक शिक्षिका नहीं, पूरे जिले की व्यवस्था पर सवाल

आपको बताते चलें कि यह

केवल एक शिक्षिका का मामला नहीं है। जिले के कई विद्यालयों के शिक्षक व अन्य कर्मचारी वर्षों से छात्रावास अधीक्षक अथवा अन्य प्रभारों में कार्यरत हैं। पहले से ही शिक्षकों व कर्मचारियों की कमी से जूझ रहे विद्यालयों में यह व्यवस्था बच्चों की पढ़ाई पर सीधा असर डाल रही है। अभिभावकों और स्थानीय लोगों का कहना है कि जब कक्षाओं में शिक्षक ही उपलब्ध नहीं होंगे तो गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की कल्पना कैसे की जा सकती है।

शासन के आदेशों का पालन आखिर क्यों नहीं हो रहा

सबसे बड़ा सवाल यह है कि शासन समय-समय पर शिक्षकों को उनके मूल पदस्थापना स्थल पर भेजने और शिक्षा व्यवस्था को मजबूत करने के निर्देश जारी करता रहा है। इसके बावजूद यदि वर्षों से वही स्थिति बनी हुई है तो आखिर आदेशों का पालन क्यों नहीं हो रहा.? क्या शिक्षा विभाग ने कभी यह समीक्षा की कि किन विद्यालयों में शिक्षक वर्षों से अनुपस्थित हैं और इसका बच्चों की पढ़ाई पर कितना असर पड़ रहा है या फिर आदेश सिर्फ फाइलों तक सीमित रह गए हैं..?

संलग्नीकरण खत्म हुआ, लेकिन छात्रावासों व दफ्तरों में जमे शिक्षक अब भी क्यों

हाल ही में जिले में संलग्नीकरण समाप्त करने की कार्रवाई को शिक्षा व्यवस्था सुधारने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम बताया गया था। कई शिक्षकों और कर्मचारियों को उनके मूल पदस्थापना स्थल पर लौटाया गया। ऐसे में यह सवाल और भी बड़ा हो गया है कि यदि संलग्नीकरण समाप्त किया जा सकता है तो वर्षों से छात्रावासों और अन्य प्रभारों में कार्यरत शिक्षकों को वापस भेजने में आखिर देरी किस बात की है..?

शिक्षा विभाग की कार्यशैली पर उठ रहे गंभीर सवाल

इस पूरे मामले ने शिक्षा विभाग की कार्यप्रणाली पर गंभीर प्रश्नचिह्न लगा दिए हैं। यदि विभाग को यह जानकारी है कि कई शिक्षक वर्षों से विद्यालयों से बाहर हैं तो अब तक सुधारात्मक कदम क्यों नहीं उठाए गए, क्या बच्चों की पढ़ाई विभाग की प्राथमिकता में शामिल नहीं है। यदि शिक्षक कक्षाओं से दूर रहेंगे तो सरकारी स्कूलों की शिक्षा व्यवस्था मजबूत होने के बजाय लगातार कमजोर होती जाएगी।

फिलहाल विभाग की प्रतिक्रिया का इंतजार

इस पूरे मामले में अभी तक जिला शिक्षा अधिकारी अथवा संबंधित विभागीय अधिकारियों की ओर से कोई आधिकारिक प्रतिक्रिया सामने नहीं आई है। विभाग का पक्ष प्राप्त होने पर उसे भी प्रमुखता से प्रकाशित किया जाएगा। फिलहाल यह मामला शिक्षा विभाग की जवाबदेही और सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले हजारों विद्यार्थियों के भविष्य से जुड़ा बड़ा प्रश्न बन गया है।

अधीक्षक संजय मेहता हुए सेवानिवृत, अपर कलेक्टर सुनील नायक ने अच्छे स्वास्थ्य,

अम्बिकापुर 31 जुलाई 2026/ जिला कलेक्ट्रेट कार्यालय अम्बिकापुर में अधीक्षक के पद से सेवानिवृत्त हुए संजय मेहता को उनके सेवानिवृत्ति अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में अपर कलेक्टर सुनील नायक ने पुष्पगुच्छ एवं शॉल श्रीफल भेंट कर सम्मानित किया तथा उनके स्वस्थ, सुखमय एवं दीघार्यु जीवन की शुभकामनाएं दीं। इस अवसर पर संजय मेहता को पेंशन भुगतान आदेश (पीपीओ) प्रदाय कर भावभीनी विदाई दी गई। गौरतलब है कि श्री संजय मेहता ने 8 जनवरी 1988 को द्वितीय श्रेणी लिपिक के पद पर शासकीय सेवा प्रारंभ की थी। प्रारंभिक पदस्थापना अविभाजित सरगुजा जिले के जनपद पंचायत भैयाथान में हुई। इसके उपरांत उन्होंने विकास शाखा सहित जिला कार्यालय की वित्त शाखा, भू-अभिलेख शाखा, लाइसेंस शाखा, खाद्य शाखा एवं अन्य महत्वपूर्ण शाखाओं में सहायक ग्रेड-3 के रूप में अपनी सेवाएं प्रदान कीं।

दिनांक 23 नवंबर 2007 को सहायक ग्रेड-2 के पद पर पदोन्नत होने के बाद उन्होंने खाद्य शाखा में कार्य किया। 22 जुलाई 2013 से उन्हें जिला निर्वाचन कार्यालय अम्बिकापुर में पदस्थ किया गया। इसके पश्चात आयुक्त, सरगुजा संभाग द्वारा 10 नवंबर 2022 को उन्हें ऑडिटर के पद पर पदोन्नत कर कार्यालय आयुक्त, सरगुजा संभाग, अम्बिकापुर में पदस्थ किया गया। बाद में राजस्व एवं आपदा प्रबंधन विभाग, रायपुर द्वारा उन्हें अधीक्षक के पद पर पदोन्नत कर जिला कार्यालय अम्बिकापुर में पदस्थ किया गया। उन्होंने 18 मई 2026 से अधीक्षक के रूप में कार्यभार ग्रहण किया तथा लगभग दो माह 13 दिन तक इस दायित्व का निर्वहन करते हुए 31 जुलाई 2026 को 62 वर्ष की अधिवार्षिकी आयु पूर्ण करने पर शासकीय सेवा से सेवानिवृत्त हुए।

युवाओं के सपनों की सुरक्षा की दिशा में बड़ा कदम, लोक परीक्षा संशोधन विधेयक ऐतिहासिक : शिव नाथ यादव

सूरजपुर, 31 जुलाई 2026 द शूटर। प्रतियोगी परीक्षाओं की निष्पक्षता और लाखों युवाओं के भविष्य को सुरक्षित बनाने की दिशा में लोकसभा से पारित लोक परीक्षा (अनुचित साधन निवारण) संशोधन विधेयक, 2026 को भाजपा जिला प्रभारी एवं प्रदेश मंत्री शिव नाथ यादव ने ऐतिहासिक पहल बताया है। उन्होंने कहा कि यह कानून उन मेहनती युवाओं के विश्वास को मजबूत करेगा, जो अपनी प्रतिभा और परिश्रम के दम पर सफलता हासिल करने का सपना देखते हैं।

शिव नाथ यादव ने कहा कि प्रश्नपत्र लीक, नकल और संगठित परीक्षा माफिया जैसी गतिविधियां केवल एक परीक्षा को प्रभावित नहीं करतीं, बल्कि ईमानदारी से तैयारी करने वाले लाखों अभ्यर्थियों की उम्मीदों पर भी चोट पहुंचाती हैं। ऐसे में यह संशोधन विधेयक परीक्षा प्रणाली में पारदर्शिता, जवाबदेही और विश्वसनीयता स्थापित करने की दिशा में एक मजबूत कदम साबित होगा।

उन्होंने कहा कि संशोधन के जरिए परीक्षा संबंधी अपराधों के विरुद्ध दंडात्मक प्रावधानों को और अधिक कठोर बनाया गया है, जिससे परीक्षा माफिया और अनियमितताओं में शामिल लोगों पर प्रभावी कार्रवाई संभव होगी। साथ ही परीक्षा आयोजित करने वाली एजेंसियों और सेवा प्रदाताओं की जवाबदेही भी बढ़ेगी, जिससे पूरी भर्ती प्रक्रिया अधिक निष्पक्ष और भरोसेमंद बनेगी।

श्री यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र सरकार युवाओं के हितों को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए शिक्षा, कौशल विकास, रोजगार और पारदर्शी भर्ती व्यवस्था को लगातार सुदृढ़ कर रही है। विकसित भारत के निर्माण के लिए यह आवश्यक है कि प्रत्येक युवा को उसकी मेहनत और योग्यता के अनुरूप निष्पक्ष अवसर मिले। उन्होंने विश्वास जताया कि यह संशोधन विधेयक ईमानदार प्रतिभाओं की रक्षा करेगा और प्रतियोगी परीक्षाओं में अनियमितताओं पर प्रभावी अंकुश लगाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

भटगांव 1/2 खदान के सीटीओ को लेकर मंत्री लक्ष्मी राजवाड़े से मिला मजदूर संघ, हजारों परिवारों की आजीविका का मुद्दा उठाया

दतिमा मोड़/सूरजपुर, 31 जुलाई 2026, द शूटर।

भटगांव 1/2 भूमिगत कोयला खदान के भविष्य और उससे जुड़े हजारों श्रमिक परिवारों की रोजी-रोटी को लेकर भारतीय कोयला खदान मजदूर संघ (बीएमएस) ने प्रदेश की महिला एवं बाल विकास तथा समाज कल्याण मंत्री श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े से मुलाकात कर अहम मांग रखी। एसईसीएल भटगांव क्षेत्र स्थित गेस्ट हाउस में हुई इस मुलाकात के दौरान प्रतिनिधिमंडल ने खदान के लिए सी.टी.ओ. (कंसेंट टू ऑपरेट) शीघ्र जारी कराने की आवश्यकता पर गंभीरता से ध्यान आकर्षित कराया।प्रतिनिधिमंडल ने मंत्री को बताया कि यदि समय रहते भटगांव 1/2 खदान को सीटीओ नहीं मिला तो खदान के संचालन पर संकट गहरा सकता है। इसका सीधा असर वहां कार्यरत हजारों कर्मचारियों और उनके परिवारों की आजीविका पर पड़ेगा। मजदूर संघ ने कहा कि यह केवल एक प्रशासनिक प्रक्रिया का विषय नहीं, बल्कि उन परिवारों की चिंता है जिनका जीवन पूरी तरह इस खदान से जुड़ा हुआ है।संघ ने मंत्री से आग्रह किया कि संबंधित विभागों के स्तर पर आवश्यक पहल कर खदान को शीघ्र सीटीओ दिलाने में सहयोग किया जाए, ताकि उत्पादन और रोजगार दोनों निर्बाध रूप से जारी रह सकें।कैबिनेट मंत्री श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े ने प्रतिनिधिमंडल की बातों को गंभीरता से सुना और आश्वस्त किया कि नियमों के दायरे में रहते हुए आवश्यक सहयोग एवं सकारात्मक पहल की जाएगी, जिससे इस महत्वपूर्ण मुद्दे का समाधान निकल सके।

इस अवसर पर भारतीय कोयला खदान मजदूर संघ के दिलीप कुमार मंडल, शिवराम सिंह, अशोक गुप्ता, हरेंद्र सिंह, जगरनाथ शर्मा, अभिषेक मंडल (गोल्डी), सौरव कुमार, उमेश राजवाड़े, योगेंद्र सिंह, मानिकचंद सिंह, उमेश कुमार राजवाड़े, रामेश्वर प्रसाद तथा राजेंद्र पटेल सहित अन्य पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

हिन्दी दैनिक
द शूटर

तेज-तर्रार जनप्रतिनिधि की कार्यशैली फिर आई नजर, भटगांव अस्पताल पहुंचीं मंत्री लक्ष्मी राजवाड़े कहा, जनता की सेहत से कोई समझौता नहीं

सूरजपुर 31 जुलाई 2026 द शूटर। जनप्रतिनिधि की पहचान केवल मंचों पर दिए गए भाषणों से नहीं, बल्कि उन कदमों से होती है जो सीधे जनता के जीवन को प्रभावित करते हैं। भटगांव विधायक एवं महिला एवं बाल विकास मंत्री श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े ने अपनी उसी सक्रिय और जमीनी कार्यशैली का परिचय देते हुए भटगांव सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र का औचक निरीक्षण किया। बिना किसी पूर्व सूचना के अस्पताल पहुंचीं मंत्री ने व्यवस्थाओं की वास्तविक स्थिति देखी और अधिकारियों को साफ शब्दों में कहा कि मरीजों की सुविधा और उपचार में किसी भी तरह की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी।निरीक्षण के दौरान उन्होंने ओपीडी, वार्ड, प्रसूति कक्ष, दवा वितरण केंद्र, पेयजल व्यवस्था और अस्पताल परिसर की साफ-सफाई का बारीकी से अवलोकन किया। केवल अधिकारियों की जानकारी पर भरोसा करने के बजाय उन्होंने अस्पताल में भर्ती मरीजों और उनके परिजनों से सीधे बातचीत की। इलाज समय पर मिल रहा है या नहीं, दवाएं उपलब्ध हैं या नहीं, डॉक्टर नियमित रूप से उपस्थित रहते हैं या नहीं, इन सभी पहलुओं की उन्होंने खुद जानकारी ली।जहां कहीं छोटी-बड़ी कमियां नजर आईं, वहां संबंधित अधिकारियों को तत्काल सुधार के निर्देश दिए। उन्होंने स्पष्ट कहा कि सरकारी अस्पताल में आने वाला हर व्यक्ति सम्मान और बेहतर इलाज का हकदार है। डॉक्टरों और स्वास्थ्य कर्मियों की नियमित उपस्थिति, पर्याप्त दवा भंडारण, चिकित्सा उपकरणों के सुचारू संचालन और अस्पताल की स्वच्छता को लेकर भी उन्होंने विशेष निर्देश दिए।निरीक्षण के दौरान मंत्री लक्ष्मी राजवाड़े ने कहा कि प्रदेश सरकार की मंशा केवल स्वास्थ्य योजनाएं बनाना नहीं, बल्कि उनका लाभ अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाना है। उन्होंने कहा, मेरे क्षेत्र की देवतुल्य जनता को बेहतर, सुगम और गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराना मेरी सर्वोच्च प्राथमिकता है। जनता की सेहत से किसी भी प्रकार का समझौता नहीं किया जाएगा।उन्होंने यह भी कहा कि ग्रामीण अंचलों के लोगों के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र ही सबसे बड़ा सहारा होते हैं। ऐसे में यहां की व्यवस्थाएं हमेशा दुरुस्त रहनी चाहिए, ताकि किसी भी मरीज को इलाज के लिए अनावश्यक परेशानी का सामना न करना पड़े। अस्पताल प्रबंधन को नियमित निगरानी रखने और शिकायतों का त्वरित निराकरण सुनिश्चित करने के निर्देश भी दिए गए। कुलमिलाकर भटगांव क्षेत्र में लगातार जनसरोकारों से जुड़े मुद्दों पर सक्रिय रहने वाली मंत्री लक्ष्मी राजवाड़े का यह औचक निरीक्षण एक बार फिर उनकी कार्यशैली को रेखांकित करता है। जनता के बीच पहुंचकर समस्याओं को सुनना, व्यवस्थाओं की जमीनी हकीकत जानना और मौके पर ही समाधान के निर्देश देना उनकी कार्यप्रणाली की पहचान बन चुकी है। स्थानीय लोगों का मानना है कि यदि निरीक्षण में दिए गए निदेशों का गंभीरता से पालन हुआ तो अस्पताल की स्वास्थ्य सेवाओं में निश्चित रूप से सकारात्मक बदलाव देखने को मिलेगा।

पहाड़ों से बहता पानी अब गांव की प्यास बुझाएगा, बेलटीकरी में कंटूर ट्रेंच ने बदली जल संरक्षण की तस्वीर

सूरजपुर, 31 जुलाई 2026, द शूटर। बरसात का पानी कभी गांवों के लिए चिंता का कारण बनता था। तेज बहाव के साथ उपजाऊ मिट्टी भी बह जाती थी और गर्मियों में जल संकट गहरा जाता था। लेकिन अब सूरजपुर जिले के बेलटीकरी गांव में यही बारिश उम्मीद की नई कहानी लिख रही है। यहां बनाई गई कंटूर ट्रेंच वर्षा जल को सहेजकर धरती की प्यास बुझाने और आने वाली पीढ़ियों के लिए पानी बचाने का काम कर रही हैं। प्रदेश के मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में संचालित मोर गांव, मोर पानी महाअभियान के तहत जल और मृदा संरक्षण की दिशा में किए जा रहे प्रयास अब जमीन पर असर दिखाने लगे हैं। ग्राम पंचायत बेलटीकरी में विकसित भारत जी-रामजी योजना के अंतर्गत कलेक्टर श्रीमती रेना जमील के मार्गदर्शन और जिला पंचायत सीईओ विजेंद्र सिंह पाटले के निर्देशन में हजारों कंटूर ट्रेंच का निर्माण कराया गया है। बरसात के दौरान ये संरचनाएं वर्षा जल के तेज बहाव को रोककर उसे धीरे-धीरे जमीन में समाहित कर रही हैं, जिससे भू-जल स्तर को बढ़ाने में मदद मिल रही है। इन कंटूर ट्रेंच का सबसे बड़ा लाभ यह है कि पहाड़ी और ढलान वाले क्षेत्रों में मिट्टी का कटाव काफी हद तक रुक गया है। पहले जहां बारिश का पानी उपजाऊ मिट्टी को बहाकर खेतों की उर्वरता कम कर देता था, वहीं अब पानी की रफ्तार नियंत्रित होने से मिट्टी सुरक्षित रह रही है। इसका सीधा लाभ किसानों की खेती और पर्यावरण दोनों को मिल रहा है।

इस पहल ने केवल जल संरक्षण को ही मजबूती नहीं दी, बल्कि विकसित भारत जी-रामजी योजना के माध्यम से ग्रामीणों को स्थानीय स्तर पर रोजगार भी उपलब्ध कराया है। बेलटीकरी की यह पहल साबित कर रही है कि यदि सामुदायिक भागीदारी, सुनियोजित कार्य और प्रशासनिक प्रतिबद्धता एक साथ जुड़ जाएं, तो प्रकृति का संरक्षण भी संभव है और गांवों का भविष्य भी सुरक्षित बनाया जा सकता है। कुलमिलाकर बेलटीकरी की ये कंटूर ट्रेंच आज सिर्फ मिट्टी और पानी को नहीं रोक रहीं, बल्कि आने वाले कल के लिए उम्मीद, समृद्धि और सतत विकास की मजबूत नींव भी तैयार कर रही हैं।

निःशुल्क आयुष स्वास्थ्य शिविर आज मेंड्राकला में, विशेषज्ञ चिकित्सक देंगे परामर्श और उपचार

अम्बिकापुर, 31 जुलाई 2026, द शूटर। स्वस्थ समाज की दिशा में एक सार्थक पहल के तहत छत्तीसगढ़ जन जागृति सेवा समिति, जिला सरगुजा द्वारा स्वास्थ्य जागरूकता अभियान के अंतर्गत निःशुल्क आयुर्वेदिक एवं आयुष स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया जा रहा है। यह शिविर 1 अगस्त 2026 शनिवार को दोपहर 3 बजे से ग्राम पंचायत मेंड्राकला स्थित शारदा स्कूल के पीछे जागृति भवन में आयोजित होगा।

शिविर का उद्देश्य ग्रामीणों को आयुर्वेद, होम्योपैथी और योग आधारित उपचार पद्धतियों से जोड़ना, शासन की आयुष योजनाओं की जानकारी देना तथा लोगों को बेहतर स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करना है। जिला आयुष अधिकारी, अम्बिकापुर के मार्गदर्शन में आयोजित इस शिविर में अनुभवी चिकित्सकों द्वारा निःशुल्क स्वास्थ्य परीक्षण, परामर्श और आवश्यक औषधियों का वितरण किया जाएगा।शिविर में डॉ. लंकेश्वर सिंह, डॉ. विनय गुप्ता, डॉ. आदित्य गुप्ता, योग चिकित्सक डॉ. तरुण राही, होम्योपैथिक चिकित्सा अधिकारी डॉ. अनीस अहमद मंसूरी सहित आयुष विभाग के फार्मासिस्ट एवं अन्य स्वास्थ्यकर्मी अपनी सेवाएं देंगे। समिति की प्रदेश अध्यक्ष प्रभा यादव ने क्षेत्रवासियों से अपील करते हुए कहा है कि स्वास्थ्य ही सबसे बड़ी पूंजी है। इसलिए प्रत्येक परिवार इस अवसर का लाभ उठाए और अधिक से अधिक संख्या में पहुंचकर निःशुल्क स्वास्थ्य परीक्षण एवं विशेषज्ञ चिकित्सकों की सलाह प्राप्त करें। शिविर में स्थानीय जनप्रतिनिधियों, समिति के पदाधिकारियों एवं सदस्यों की भी गरिमामयी उपस्थिति रहेगी।

सेवानिवृत्त हुए प्रधानपाठक, शिक्षकों ने आयोजित किया सम्मान कार्यक्रम

प्रतापपुर/द शूटर। पूर्व माध्यमिक शाला चांचीडांड के। प्रधानपाठक रामू राम मानिक 42 साल की सेवा के बाद 31 जुलाई को सेवानिवृत्त हो गए। स्थानीय शिक्षकों ने उनके सम्मान में कार्यक्रम आयोजित कर उज्जवल भविष्य की कामना की। इनका जन्म 04/07/1964 को प्रतापपुर के कदमपारा मे हुआ, इन्होने अपनी प्राथमिक से हायर सेकेंडरी की पढ़ाई प्रतापपुर मे की व उच्च शिक्षा पीजी महाविद्यालय अंबिकापुर से पुरी की। शिक्षक के रूप पहली नियुक्ति 1984 में बेलसर शंकरगढ़ में हुई थी।माध्यमिक शाला प्रांगण में सम्मान कार्यक्रम के दौरान उन्होंने कहा कि आज स्कूल छोड़कर जाना भावुक करने वाला पल है क्योंकि 42 साल तक उन्होंने बच्चों के बीच समय गुजारा और उन्हें पढ़ाया है।उन्होंने सभी सहयोगी शिक्षकों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि बच्चों का भविष्य गढ़ने सभी ने साथ मिलकर काम किया।उन्होंने बच्चों से कहा कि वे हमेशा मन लगाकर पढ़ाई करें ताकि भविष्य उज्ज्वल बन सके।इस दौरान उनके परिवार से पत्नी शकुंतला मानिक, बड़े पुत्र शेखर मानिक, पुत्रवधु बरखा मानिक,छोटे पुत्र सौरभ मानिक, पुत्रवधु दीक्षा मानिक नाती श्रीयांश, श्रीवत्स, सांसद प्रतिनिधि कृष्णा सोनी,संकुल प्राचार्य बलदेव राम चौहान, सीएससी बहादुर खान, जयप्रकाश खलखो, अब्बास आलम, सुनीता मिश्रा, क्रुसवानी कुजूर, निर्मला कुशवाहा, गायत्री भगत, लुमेश्वरी गोरे, सोनम सिंह, अपोलो कुजूर, श्रीकांत गुप्ता एवं संकुल के शिक्षक व ग्राम के जनप्रतिनिधिगण उपस्थित रहे।कार्यक्रम के दौरान शिक्षकों ने उनका सम्मान करते हुए उपहार भी भेंट किए।

स्थायी गुमटी से चौपाटी में बढ़ा विवाद, ठेला व्यवसायियों ने कलेक्टर, नपा अध्यक्ष और सीएमओ से लगाई गुहार

सूरजपुर 31 जुलाई 2026 द शूटर। शहर के पुराने बस स्टैंड परिसर स्थित चौपाटी में एक स्थायी गुमटी रखे जाने के बाद वर्षों से अस्थायी ठेलों के माध्यम से व्यवसाय कर रहे छोटे व्यापारियों में नाराजगी खुलकर सामने आ गई है। जिला चौपाटी संघ के बैनर तले बड़ी संख्या में व्यवसायियों ने एकजुट होकर कलेक्टर श्रीमती रैना जमील, नगर पालिका अध्यक्ष श्रीमती कुसुमलता राजवाड़े, मुख्य नगर पालिका अधिकारी (सीएमओ) मनीष गायकवाड़ तथा वार्ड पार्षद गैबिनाथ साहू से व्यक्तिगत मुलाकात कर लिखित शिकायत सौंपते हुए तत्काल कार्रवाई की मांग की।

व्यवसायियों का कहना है कि वर्षों से चौपाटी में सभी लोग नगर पालिका की निर्धारित व्यवस्था के तहत केवल अस्थायी ठेलों से कारोबार करते हैं और प्रतिदिन दुकान बंद होने के बाद अपने ठेले घर ले जाते हैं। इससे सार्वजनिक स्थल पर स्थायी कब्जा नहीं होता और सभी को समान अवसर मिलता है। उनका आरोप है कि हाल ही में चौपाटी परिसर में करीब 12:12 फीट की लोहे की स्थायी गुमटी रख दिए जाने से न केवल मौजूदा व्यवस्था प्रभावित हुई है, बल्कि इससे अन्य लोगों द्वारा भी स्थायी कब्जा करने का रास्ता खुल सकता है।व्यापारियों ने आशंका जताई कि यदि समय रहते इस पर रोक नहीं लगी तो पूरी चौपाटी धीरे-धीरे स्थायी अतिक्रमण की चपेट में आ जाएगी और वर्षों से अपने परिवार का भरण-पोषण कर रहे छोटे व्यवसायियों के सामने रोजी-रोटी का संकट खड़ा हो सकता है। उन्होंने प्रशासन से चौपाटी में रखी गई स्थायी गुमटी को तत्काल हटाने तथा भविष्य में किसी भी प्रकार के स्थायी अतिक्रमण पर पूर्ण प्रतिबंध लगाने की मांग की है।व्यापारियों ने यह भी कहा कि समस्या केवल चौपाटी तक सीमित नहीं है। शहर के कई प्रमुख चौक-चौराहों और बाजार क्षेत्रों में भी स्थायी एवं अस्थायी अतिक्रमण लगातार बढ़ रहा है। इससे सड़कें संकरी हो रही हैं, यातायात प्रभावित हो रहा है और शहर की व्यवस्था व सौंदर्य दोनों पर असर पड़ रहा है। उनका कहना है कि अतिक्रमण रोकना नगर पालिका की जिम्मेदारी है, लेकिन समय पर कार्रवाई नहीं होने से बाद में यातायात और पुलिस विभाग पर अतिरिक्त दबाव बनता है।व्यवसायियों ने स्पष्ट किया कि वे किसी विशेष सुविधा की मांग नहीं कर रहे, बल्कि केवल वर्षों से चली आ रही समान और व्यवस्थित व्यवस्था को बनाए रखने की अपील कर रहे हैं। अब निगाहें इस बात पर टिकी हैं कि जिला प्रशासन और नगर पालिका इस सामूहिक शिकायत पर कितनी गंभीरता से निर्णय लेते हैं और चौपाटी को स्थायी अतिक्रमण से बचाने के लिए क्या ठोस कदम उठाए जाते हैं।

बहरहाल ज्ञापन सौंपने वालों में प्रदीप अग्रवाल, गोविंद कुशवाहा, रवि कुशवाहा, विकास अग्रवाल, सुशील थापा, शिव प्रकाश, प्रदीप कुशवाहा, रतनलाल मेवाड़, राकेश कुशवाहा, झलर मिश्रा, विनीत मिश्रा, मलखान सिंह, जगत थापा, दीपक अग्रवाल, गौतम, शंकर मद्रासी, संजय जायसवाल, कमलेश साहू, गुलाब गुप्ता, श्रीमती सुनीता गुप्ता, राजा बाबू साहू सहित जिला चौपाटी संघ सूरजपुर के बड़ी संख्या में ठेला एवं गुमटी व्यवसायी मौजूद रहे।

15 महीने से राशन वितरण में कथित अनियमितता, ग्रामीणों ने मंत्री लक्ष्मी राजवाड़े को सौंपा ज्ञापन

सूरजपुर 31 जुलाई 2026 द शूटर । विकासखंड ओड़गी के ग्राम पंचायत विशालपुर में सार्वजनिक वितरण प्रणाली (पीडीएस) के तहत 15 महीने से राशन वितरण में कथित अनियमितता का मामला सामने आया है। ग्रामीणों ने आरोप लगाया है कि कई पात्र हितग्राही पिछले एक वर्ष तीन माह से शासन का चावल नहीं मिलने के कारण खाद्य संकट और आर्थिक परेशानियों का सामना कर रहे हैं।इस संबंध में ग्रामीणों ने सरपंच और उपसरपंच के साथ महिला एवं बाल विकास मंत्री एवं भटगांव विधायक श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े को ज्ञापन सौंपकर पूरे मामले की निष्पक्ष जांच, दोषियों पर कड़ी कार्रवाई तथा सभी पात्र हितग्राहियों को लंबित राशन तत्काल उपलब्ध कराने की मांग की है।ग्रामीणों का कहना है कि कई बार शिकायत करने के बावजूद अब तक कोई ठोस कार्रवाई नहीं हुई। उनका आरोप है कि जिम्मेदार अधिकारियों की लापरवाही के कारण गरीब परिवार शासन की खाद्यान्न योजना के लाभ से वंचित हैं। उन्होंने मांग की है कि पूरे प्रकरण की उच्चस्तरीय जांच कर दोषियों के विरुद्ध कार्रवाई करते हुए लंबित राशन का शीघ्र वितरण सुनिश्चित किया जाए।

एक पक्की छत ने बदल दी जिंदगी... अब बारिश नहीं, खुशियां दस्तक देती हैं

*** भैयाथान के मुनेश्वर प्रसाद यादव का वर्षों पुराना सपना हुआ साकार, अब सुरक्षित घर में खुशहाल जीवन**

सूरजपुर, 31 जुलाई 2026 द शूटर।घर केवल रहने की जगह नहीं होता, बल्कि परिवार की सुरक्षा, सम्मान और सपनों का आधार होता है। जब किसी गरीब परिवार को अपना पक्का घर मिलता है, तो उसके साथ जीवन की कई चिंताएं भी खत्म हो जाती हैं। जनपद पंचायत भैयाथान की ग्राम पंचायत कसकेला के मुनेश्वर प्रसाद यादव के परिवार की कहानी भी कुछ ऐसी ही है, जहां प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण) ने वर्षों से अधूरे पड़े एक सपने को हकीकत में बदल दिया।मुनेश्वर प्रसाद यादव का परिवार लंबे समय तक कच्चे मकान में रहने को मजबूर था। बरसात का मौसम आते ही परिवार की चिंता बढ़ जाती थी। कच्चे मकान की कमजोर दीवारें और जर्जर छत हमेशा असुरक्षा का एहसास कराती थीं। हर मौसम अपने साथ नई चुनौतियां लेकर आता था और परिवार के मन में अपने सुरक्षित आशियाने की चाह और भी गहरी होती जाती थी। आर्थिक स्थिति ऐसी नहीं थी कि वे स्वयं पक्का मकान बनवा सकें।

इसी दौरान प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण) के अंतर्गत उनका चयन हुआ। शासन से मिली आर्थिक सहायता और प्रशासन के तकनीकी मार्गदर्शन से उनका वर्षों पुराना सपना धीरे-धीरे साकार होने लगा। कुछ ही समय में उनका पक्का मकान तैयार हो गया और परिवार को एक सुरक्षित तथा सम्मानजनक आशियाना मिल गया।आज मुनेश्वर प्रसाद यादव का परिवार अपने नए घर में सुकून और आत्मविश्वास के साथ जीवन बिता रहा है। अब उन्हें मौसम की मार या मकान की असुरक्षा की चिंता नहीं सताती। बच्चों को बेहतर वातावरण मिला है और पूरे परिवार के चेहरे पर संतोष साफ दिखाई देता है।मुनेश्वर प्रसाद यादव बताते हैं कि उन्होंने कभी नहीं सोचा था कि उनका भी अपना पक्का घर होगा। आज जब वे अपने परिवार को सुरक्षित घर में खुशहाल जीवन जीते देखते हैं तो उन्हें लगता है कि उनका सबसे बड़ा सपना पूरा हो गया है। उनके अनुसार प्रधानमंत्री आवास योजना ने केवल मकान ही नहीं दिया, बल्कि पूरे परिवार को सम्मान और आत्मविश्वास के साथ जीने का अवसर भी दिया है। इसके लिए उन्होंने भारत सरकार एवं छत्तीसगढ़ शासन के प्रति आभार व्यक्त किया।प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण) आज ऐसे हजारों परिवारों के जीवन में बदलाव की नई कहानी लिख रही है। यह योजना केवल ईंट और सीमेंट से घर नहीं बनाती, बल्कि उन लोगों के सपनों को भी आकार देती है, जिनके लिए अपना पक्का घर कभी एक दूर की उम्मीद हुआ करता था। मुनेश्वर प्रसाद यादव की कहानी इस बात का प्रमाण है कि जब किसी जरूरतमंद को सुरक्षित छत मिलती है, तो उसके साथ जीवन में विश्वास, सम्मान और बेहतर भविष्य की नई शुरूआत भी होती है।

मानसिक स्वास्थ्यः तत्काल कार्रवाई की मांग करने वाला एक मूक संकट

मानसिक कल्याण को अब शारीरिक स्वास्थ्य के लिए माध्यमिक नहीं माना जा सकता है। जैसे-जैसे सरकारी पहल आकार लेती है और जन जागरूकता बढ़ती है, हमारे देश के मानसिक स्वास्थ्य और इसके साथ, हमारे भविष्य की रक्षा के लिए सामूहिक, दयालु प्रतिक्रिया का समय आ गया है एक पुरानी कहावत है कि एक स्वस्थ दिमाग एक स्वस्थ शरीर की ओर जाता है - मैं इससे अधिक सहमत नहीं हो सका! महामारी के बाद से, हम मानसिक स्वास्थ्य संबंधी स्थितियों में भारी वृद्धि देख रहे हैं। यह गंभीर चिंता का विषय है कि बड़ी संख्या में लोग आज असहनीय तनाव, अवसाद और चिंता से पीड़ित हैं। यह समान रूप से ध्यान देने के विषय में है कि ये बीमारियां उम्र के स्पेक्ट्रम में प्रभावित हो रही हैं, चाहे वे छात्र हों, युवा वयस्क हों या बुजुर्ग। जब हम मानसिक स्वास्थ्य से संबंधित आंकड़ों को देखते हैं, तो यह ईंटों के एक टन से प्रभावित होने जैसा है। इस मुद्दे की हद तक है कि भारत में हर घंटे एक छात्र आत्महत्या कर रहा है। देश भर के उच्च शिक्षण संस्थानों में बढ़ती आत्महत्या मौतों पर ध्यान देते हुए, सुप्रीम कोर्ट ने हाल ही में परिसरों में छात्र आत्महत्या से होने वाली मौतों को रोकने और उनके मानसिक स्वास्थ्य के मुद्दों को दूर करने के लिए एक तंत्र के लिए एक राष्ट्रीय कार्य बल का गठन किया। पीठ ने कहा कि 2021 के लिए राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (एनसीआरबी) के आंकड़ों से गंभीर वास्तविकता पर प्रकाश डाला गया है कि देश में 13,000 से अधिक छात्रों ने आत्महत्या करके अपनी जान गंवा दी। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, अवसाद विश्व स्तर पर 300 मिलियन से अधिक लोगों को प्रभावित करता है, और यह 2030 तक विकलांगता का प्रमुख कारण होने की भविष्यवाणी की जाती है। 2024 में, भारत में अध्ययन अवसाद के एक महत्वपूर्ण बोझ को प्रकट करता है, अनुमान के साथ यह दशार्ता है कि 56 मिलियन से अधिक लोग प्रभावित हैं और अनुसंधान बढ़ते रुझान की ओर इशारा करते हैं, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में और कुछ जनसांख्यिकी के बीच। पेशा तेजी से शहरीकरण, आर्थिक दबाव, सामाजिक अलगाव और महामारी जैसे कारकों ने वृद्धि में योगदान दिया है। भारत में द्विध्रुवी विकार परिदृश्य भी काफी गंभीर है, देश में 150 में से लगभग 1 व्यक्ति इससे पीड़ित हैं, और काफी परेशान हैं, 70 प्रतिशत अनुपचारित हैं। यह कम मूड, कम ऊर्जा, ब्याज की हानि, नींद की समस्याओं, विचारों या आत्म-नुकसान के कृत्यों के साथ-साथ उन्माद के एपिसोड की विशेषता है। शोध अब इस तथ्य पर प्रकाश डाल रहा है कि आत्महत्या के लिए अपनी जान गंवाने वाले 60 प्रतिशत लोगों में अवसाद या द्विध्रुवी विकार जैसे मूड की बीमारी है। यह खोज महत्वपूर्ण है क्योंकि यह इस सबसे दुखद अंतिम चरण से पहले प्रगति की एक श्रृंखला की ओर इशारा करता है। जब हम भारत में मानसिक स्वास्थ्य परिदृश्य में गहराई से देखते हैं, तो कई मुद्दे जिनका मानसिक स्वास्थ्य पर गहरा प्रभाव पड़ता है - सामने आते हैं। जब हम भारत में मानसिक स्वास्थ्य परिदृश्य में गहराई से देखते हैं, तो कई मुद्दे जिनका मानसिक स्वास्थ्य पर गहरा प्रभाव पड़ता है - सामने आते हैं। छात्रों और युवा के मामले में, कई भौतिक चीजों की खोज में बहुत व्यस्त हैं क्योंकि उनके लिए पूरी जगह बेहद प्रतिस्पर्धी हो गई है, विश्राम और अनवाइंडिंग पर ध्यान कम हो गया है, और परिणामस्वरूप जलने वाले बाहरी और अवसाद उनके जीवन को घेर लेते हैं। इस सब में, इंटरनेट और सोशल मीडिया का दबाव बढ़ाने और अप्राप्य और अति महत्वाकांक्षी लक्ष्यों को स्थापित करने में प्रभाव - सहकर्मी दबाव के सौजन्य से, युवाओं के जीवन में भी कहर ढा रहा है। बुजुर्गों के मामले में, हम अकेलेपन में वृद्धि देख रहे हैं क्योंकि उनके बच्चे या तो पढ़ाई या नौकरी के कारण उनके साथ नहीं रह रहे हैं, या व्यस्तता और अपने व्यस्त कार्यक्रम से अलग होने में असमर्थता के कारण बहुत कम समय बिता रहे हैं। इसलिए बढ़ती असुरक्षा के साथ-साथ बढ़ती उम्र का डर है

प्रार्थनाओं की जगह

हम सभी के जीवन में प्रार्थनाओं का महत्त्व बहुत अधिक रहा है। यही कारण है कि शुरूआत से ही प्रार्थनाएं हमारे जीवन का केंद्र बनी रही हैं। फिर वह विद्यालय में कक्षाओं के शुरू और अंत में नैतिक मूल्यों और देशभक्ति से ओतप्रोत गीत हों या फिर हर दिन सुबह और सांध्य बेला में भजन मंडलियों, दोस्तों और परिवार के साथ लयबद्ध कर भक्ति रस, काव्य रस तो कभी क्षेत्रीय बोलियों में डूबी रचनाएं हों । प्रार्थनाएं हमें कभी कबीर, रहीम, मीरा के दोहों से गुजरने का मौका देती हैं तो कभी रैदास, नानक, सूफी जैसे महान संतों, चिंतकों के बीच बैठा देती हैं। हम निर्गुण भजनों के अर्थों को समझ जीवन में ठहराव महसूस करने लगते हैं, जैसे विचलित मन को किसी ने सही दिशा में एकाग्रचित्त कर दिया हो । प्रार्थनाएं कलात्मक होती हैं। फिल्मों में भी लगातार प्रार्थनाओं का उपयोग किया गया है, जो बहुत लोकप्रिय भी हुईं। यकीनन जहां प्रार्थनाएं की जा रही होती हैं, वहां मनुष्य के भीतर के अच्छे गुणों को उभरने की संभावनाएं अधिक हो जाती हैं। हम यहां लाउडस्पीकर पर शोर मचाती, अपनी भव्यता, विलासिता सबको दिखाने, खुद को श्रेष्ठतर साबित करने की होड़ में कोलाहल में तब्दील हो चुकी प्रार्थनाओं, भजनों की बात नहीं कर रहे हैं। वे तो बस मनुष्य की जिद को संतुष्ट करने के लिए किए जा रहे हैं, जो कि केवल मैं और मेरे तक ही सीमित हैं। जबकि प्रार्थनाएं पूरी सृष्टि को अपना समझने की उदारता हमारे भीतर लेकर आती हैं। हम सादगी में लिपटी उन मद्धिम ध्वनि तरंगों की बात कर रहे हैं, जो हमें मनुष्यता, भाईचारे का पाठ पढ़ा जाती हैं। प्रार्थनाएं आध्यात्मिक रूप से मनुष्य को बेहतर इंसान बनाने के लिए हमेशा से कार्यरत रही हैं । वे हमारे भीतर का उजला पक्ष रेखांकित कर देती हैं, हम अपने आप को एक बेहतर इंसान के रूप में महसूस करने लगते हैं। उनके होने से आबोहवा स्वस्थ, सुंदर और निर्मल हो जाती है । अहंकार से इंसान को मुक्त कर विनम्रता और प्रेम से सराबोर कर देती हैं। प्रार्थनाएं वर्गों में विभाजित नहीं होतीं, समूची मनुष्य जाति के कल्याण के लिए होती हैं। करने वाला एक मूक संकट अगर हमारी प्रार्थनाएं करुणा, भाईचारा, प्रेम, सहिष्णुता उत्पन्न करने में विफल हो रही हैं, तो हमें समझ लेना चाहिए कि कहीं न कहीं उनके वास्तविक रूप और उद्देश्य को स्वार्थपूर्ति के चलते बदल दिया गया है। अब हम प्रार्थना नहीं कर रहे हैं। हम किसी रणनीति का शिकार हो चुके हैं। प्रार्थना केवल आध्यात्मिक या धार्मिक शब्द ही नहीं है, यह आधिकारिक शब्द भी है। हम सभी को प्रार्थना पत्र लिखना शिक्षा के शुरूआती दौर में ही सिखा दिया गया था जो भविष्य को लेकर विद्यार्थियों को सुनिश्चित करता है कि वे एक सभ्य समाज में हैं, जहां अगर प्रार्थना की शैली पत्र लिखा जाए,

बढ़ती जंगल की आग से उत्तर भारत की पहाड़ियों पर संकट गहराया

उत्तर भारत की पहाड़ियों पर संकट गहराया उत्तर भारत के पहाड़ी इलाके जंगल की आग की बढ़ती समस्या से जूझ रहे हैं, जिससे वहां के लोगों, खेती और प्राकृतिक संसाधनों पर बुरा असर पड़ रहा है। उत्तराखंड की पहाड़ियों में पढ़ाई करती एक बच्ची की तस्वीर ने पूरे देश का ध्यान खींचा है। यह तस्वीर दिखाती है कि कैसे सैकड़ों स्कूली बच्चों को जंगल की आग के धुएं की तीक्ष्णता से बचने के लिए अपनी आंखों पर गीले कपड़े रखने पड़ते हैं। इस इलाके में आने वाले पर्यटकों ने खतरनाक धुंध, बहुत कम विज़िबिलिटी और सांस लेने में तकलीफ की शिकायत की है। इलाके में जंगल की आग जंगल की आग कई जिलों में फैल गई है, जिनमें अल्मोड़ा, चमोली, रुद्रप्रयाग, उत्तरकाशी, पौड़ी, नैनीताल और मसूरी शामिल हैं। आग की लपटों ने 1,800 मीटर से ज्यादा ऊंचाई पर मौजूद चीड़ और ओक के जंगलों को अपनी चपेट में ले लिया है। तेज हवाओं ने आग बुझाने की कोशिशों को मुश्किल बना दिया है, और पर्यटक जलती हुई ढलानों से उठते धुएं की तस्वीरें शेयर कर रहे हैं। सैटेलाइट तस्वीरों से उत्तराखंड और पड़ोसी राज्यों हिमाचल प्रदेश और जम्मू-कश्मीर में कई जगहों पर जंगल की आग लगने की पुष्टि हुई है। 15 फरवरी से 29 मई, 2026 के बीच, उत्तराखंड में जंगल की आग की 476 घटनाएं दर्ज की गईं, जिनसे 402.38 हेक्टेयर इलाका प्रभावित हुआ। हिमाचल प्रदेश में 295 और जम्मू-कश्मीर में 926 आग की घटनाएं दर्ज की गईं। ये आग हर साल कुल मिलाकर कई हजार एकड़ जंगल को नष्ट कर देती हैं। कमजोर तैयारी और नीतिगत कमियां आग से निपटने की राज्य की क्षमता कमजोर है। नेशनल डिजास्टर मैनेजमेंट अथॉरिटी जंगल की आग को प्राकृतिक आपदा नहीं मानती है, जिससे उत्तराखंड के पास तैयारी का कोई विस्तृत ब्लूप्रिंट नहीं है। पिछली सर्दियों में, जनवरी में लगी आग ने 'वैली ऑफ फ्लावर्स' (फूलों की घाटी) को खतरे में डाल दिया था, जिसके लिए भारतीय वायु सेना की मदद लेनी पड़ी थी। बच्चों और स्वास्थ्य पर असर जंगल की आग के धुएं–जिसमें कार्बन डाइऑक्साइड, कार्बन मोनोऑक्साइड, नाइट्रोजन ऑक्साइड और फॉर्मेल्डिहाइड और बेंजीन जैसे वोलाटाइल ऑर्गेनिक कंपाउंड होते हैं–के संपर्क में आने वाले स्कूली बच्चों को सांस लेने में घरघराहट, सीने में जकड़न और स्वास्थ्य संबंधी अन्य समस्याएं हो रही हैं। कई बच्चों को इलाज के लिए स्थानीय अस्पतालों में ले जाया जा रहा है। खेती और अर्थव्यवस्था पर असर जंगल की आग खेती को बर्बाद कर रही है; आय का एक मुख्य स्रोत 'काफल' की फसल का 70 प्रतिशत हिस्सा नष्ट हो गया है। सर्दियों में बर्फबारी न होने और फूलों के कम आने के कारण गेहूं और सेब के उत्पादन पर भी बुरा असर पड़ा है। लगातार चल रहा हाइड्रोलॉजिकल सूखा, सर्दियों में कम होती बारिश और ग्लेशियरों का तेजी से पिघलना बारिश पर निर्भर खरीफ और रबी की फसलों के लिए और खतरा पैदा कर रहा है। आग से जंगल की निचली वनस्पति और मिट्टी की सेहत को नुकसान पहुंचता है, साथ ही भूस्खलन का खतरा भी बढ़ जाता है। रिटायर्ड एग्रीकल्चर प्रोटेक्शन ऑफिसर, बीडी शर्मा ने कहा, ₹मिट्टी से नमी सूख गई है और बीज अंकुरित नहीं हो पा रहे हैं।₹ खेती से अच्छी कमाई न होने के कारण परिवार मैदानी इलाकों की ओर पलायन कर रहे हैं। उत्तराखंड में लगभग 12,000 प्राकृतिक झरने सूख चुके हैं; अकेले अल्मोड़ा जिले में 83 प्रतिशत झरने खत्म हो गए हैं। पीने के पानी का 90 प्रतिशत हिस्सा इन्हीं झरनों से आता है, इसलिए पिथौरागढ़, चंपावत और अल्मोड़ा के लोग पानी की कमी को लेकर विरोध-प्रदर्शन कर रहे हैं। चंपावत के जिला अस्पताल में अक्सर हर दिन 67,500 लीटर पानी की कमी रहती है, जिससे सर्जरी में देरी होती है और प्रसव (बच्चे के जन्म) में मुश्किलें आती हैं। पर्यटन और संसाधनों में असंतुलन पिछले दशक में उत्तराखंड आने वाले पर्यटकों की संख्या में भारी बढ़ोतरी हुई है, जिससे जल संसाधनों पर दबाव बढ़ा है। पर्यटक हर दिन 40-70 लीटर पानी का इस्तेमाल करते हैं; मसूरी में पीक सीजन के दौरान मांग उपलब्ध आपूर्ति से दोगुनी हो जाती है। नैनीताल में अधिकारी झीलों से अतिरिक्त पानी निकाल रहे हैं, जिससे पर्यावरण को नुकसान पहुंचने का खतरा है। गांवों में पानी की किल्लत रहती है जबकि होटलों और रिसॉर्ट्स को बिना रुकावट पानी मिलता रहता है। पर्यावरणविद् स्थानीय संसाधनों पर दबाव कम करने के लिए पर्यटकों की संख्या सीमित करने की मांग कर रहे हैं। समाधान और समुदाय की भागीदारी विशेषज्ञ भूजल भंडारों (एक्विफर) को रिचार्ज करने के लिए बारिश के पानी को जमीन के अंदर जाने देने की वकालत करते हैं, साथ ही मिट्टी को स्थिर करने के लिए प्रकृति-आधारित उपाय और वृक्षारोपण पर जोर देते हैं। स्थानीय पेड़ों की जड़ें प्राकृतिक स्पंज की तरह काम करती हैं और जमीन के नीचे पानी के बहाव को धीमा करती हैं। सामुदायिक भागीदारी बहुत महत्वपूर्ण है; गांव स्तर पर लोगों की भागीदारी, वन पंचायतें और महिला व युवा मंगल दल मिलकर आग से निपटने के टिकाऊ प्रबंधन की रीढ़ बनते हैं। मई 2025 में, मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने इन समूहों की सराहना की और आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने के लिए ऋण सहायता नीति की घोषणा की। निष्कर्ष उत्तराखंड के पहाड़ी इलाके कई तरह के संकटों का सामना कर रहे हैं–पर्यावरणीय, जल-संबंधी और सामाजिक-आर्थिक–जो जलवायु परिवर्तन और अपर्याप्त तैयारियों के कारण और गंभीर हो गए हैं। पर्यावरण और आजीविका दोनों की रक्षा के लिए सामुदायिक भागीदारी, पर्यावरण को बहाल करना और टिकाऊ पर्यटन प्रबंधन बहुत जरूरी है।

आर्थिक आशंकाओं के बीच

पिछले दिनों दिल्ली में प्रधानमंत्री और अमेरिकी उपराष्ट्रपति जेडी वेंस ने प्रस्तावित द्विपक्षीय व्यापार समझौते (बीटीए) में प्रगति की सराहना करते हुए कहा कि इससे दोनों देश लाभान्वित होंगे। उल्लेखनीय है कि तेजी से आगे बढ़ रहे द्विपक्षीय कारोबारी समझौते में भारत द्वारा अमेरिका से कृषि आयात पर शुल्क कमी के प्रावधान भी हैं। भारत ने प्रारंभिक रूप से अमेरिका को बादाम, अखरोट, क्रैनबेरी, पिस्ता और दाल जैसे कृषि उत्पादों पर` शुल्क कटौती पर सहमति के संकेत दिए हैं। इस समय अमेरिका में चीन के कई कृषि उत्पादों पर लागू 245 फीसद शुल्क की तुलना में १०` 90 दिन बाद भारत के कृषि निर्यात पर लगाए जाने वाले 26 फीसद शुल्क का परिदृश्य अमेरिका में भारत के खाद्यान्न और खाद्य प्रसंस्कृत उत्पादों के निर्यात के मौके बढ़ाने वाला है। चूंकि इस वर्ष वैश्विक खाद्यान्न व्यापार के घटने की रपट आ रही है, ऐसे में कृषि उत्पादों का अधिक निर्यात भारत के लिए विदेशी मुद्रा की अधिक कमाई का माध्यम भी बन सकेगा। मानसिक स्वास्थ्यः तत्काल कार्रवाई की मांग करने वाला एक मूक संकट इसमें कोई दो मत नहीं कि जिस तरह पांच साल पहले कोरोना से जंग में हमारे खाद्यान्न भंडार देश के हथियार बन गए थे, उसी प्रकार इस समय अमेरिकी शुल्क की मार के साथ-साथ शुल्क और गैर- शुल्क बाधाओं को कम करने से होने वाली किसी भी प्रकार की हानि को कम करने के मद्देनजर देश में रिकार्ड पैदावार और खाद्य प्रसंस्करण उत्पाद एक मजबूत हथियार दिखाई दे रहे हैं। हैं। अगर हम वर्ष 2024-25 के लिए जारी मुख्य कृषि फसलों (खरीफ एवं रबी) की पैदावार के र के दूसरे अनुमान की और देखा, की ओर देखें, तो पाते हैं चावल, गेहूं, मक्का, मूंगफली एवं सोयाबीन के साथ-साथ तुअर और चने की भी रेकार्ड पैदावार की उम्मीद जताई गई है। यह कोई छोटी बात नहीं है कि देश में देश में कुल खाद्यान्न उत्पादन 33 करोड़ टन से भी अधिक होने का का अनुमान है। नहीं, वर्ष I 2024-25 5 के सकल घरेलू उत्पाद में (जीडीपी) में कृषि और संबद्ध क्षेत्रों के योगदान में 4.6 फीसद वृद्धि हो सकती है। पिछले वर्ष यह वृद्धि दर 2.7 फीसद थी। अच्छा मानसून भी कृषि विकास को नई ऊंचाई दे सकेगा। पिछले दिनों मौसम विभाग ने इस साल देश में मानसून के दौरान औसत से पांच फीसद अधिक वर्षा का अनुमान जताया है। इससे ग्रामीण भारत सहित पूरे देश की अर्थव्यवस्था को लाभ होगा और कृषि निर्यात भी बढ़ेगा। निश्चित रूप से से देश में बढ़ता खाद्यान्न उत्पादन और मजबूत होती ग्रामीण आर्थिकी देश की आर्थिक शक्ति बन गई है। इस समय देश में खाद्यान्न भंडार भरे हुए हैं और अनाज निर्यात बढ़ रहा है। हाल ही में वाणिज्य मंत्रालय की ओर से जारी आंकड़ों के अनुसार, वित्तवर्ष 2024-25 के दौरान शुल्क चुनौतियों और विश्व व्यापार को लेकर जारी अनिश्चितता के बीच भारत के कृषि निर्यात में मजबूत वृद्धि दर्ज की गई है। देश का कुल कृषि निर्यात 50 अरब डालर के पार पहुंच गया है। भारत के कृषि क्षेत्र के निर्यात में हुई बढ़ोतरी का मुख्य कारण चावल के निर्यात में 20 फीसद की तेज बढ़ोतरी को माना जा रहा है। सरकार ने धान की बंपर पैदावार और काफी अधिक अनाज जमा होने की संभावनाओं को देखते हुए एक साल बाद पिछले वर्ष सितंबर 2024 में चावल के निर्यात पर प्रतिबंधों में ढील देना शुरू कर दिया था। 2024-25 में चावल का निर्यात 20 फीसद बढ़कर 12.47 अरब डालर से अधिक हो गया है। एक दशक से भारत चावल का सबसे बड़ा निर्यातक बना हुआ है। इस तरह, जहां देश में खाद्यान्न की कमी से खाद्यान्न अधिशेष की ऊंचाइयां देश के लिए लाभप्रद बन गई है, वहीं भारत का खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र भी शुल्क संग्राम में भारत की आर्थिक ताकत बन गया है। वित्तवर्ष 2023-24 की तुलना में भारत का कृषि और प्रसंस्कृत खाद्य उत्पादों का निर्यात वित्तवर्ष 2024-25 में 13 फीसद बढ़ कर 25.14 अरब डालर हो गया है। यह एक ऐसा उभरता उद्योग है, जिसमें पिछले दस वर्षों 1 वर्षों में 50 हजार करोड़ रुपए से अधिक प्रत्यक्ष विदेशी हुआ है। इस परिप्रेक्ष्य में पीएचडी चैंबर आफ कामर्स एंड इंडस्ट्री (पीएचडीसीसीआइ) की खाद्य प्रसंस्करण पर प्रकाशित शोध अध्ययन रपट उल्लेखनीय है। इसके मुताबिक भारत के खाद्य प्रसंस्करण का क्षेत्र वर्ष 2023 में 307 अरब डालर का था, यह तेजी से बढ़ कर वित्तवर्ष 2030 तक 700 अरब डालर, वर्ष 2035 तक 1100 अरब डालर, वर्ष 2040 तक 1500 अरब डालर और वर्ष 2047 तक 2150 अरब डालर तक पहुंचने की उम्मीद है। रपट में कहा गया है कि कृषि एवं खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र से निर्यात लगातार बढ़ते हुए वर्ष 2030 तक 125 अरब डालर, वर्ष 2035 तक 250 अरब डालर, वर्ष 2040 तक 450 अरब डालर और वर्ष 2047 तक 700 अरब डालर की ऊंचाई पर पहुंच जाएगा। इस नए व्यापार युग में कृषि और ग्रामीण विकास के आधारों को और मजबूत बनाना 1 बनाना होगा। निश्चित रूप से अमेरिका की ओर से थोपे गए शुल्क से इस समय देश की आर्थिकी को होने वाले किसी भी नुकसान भरपाई के साथ भविष्य में भी अन्य किसी भी वैश्विक आर्थिक चुनौती का का मुकाबला करने के लिए कृषि और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को संवारने पर तेजी से काम करना होगा। इसमें कोई दो मत कृषि के बुनियादी ढांचे और निवेश पर पिछले एक दशक में रणनीतिपूर्वक ध्यान दिए जाने के अच्छे परिणाम मिले हैं। सूचना प्रौद्योगिकी तक पहुंच बढ़ने से ग्रामीण-शहरी दूरियों में कमी ला दी है। भारतीय किसान तेजी से डिजिटल भुगतान, फसल बीमा और बैंकों से औपचारिक ऋण की सुविधाओं की तरफ तेजी से बढ़ रहे हैं। उम्मीद कि अमेरिका के साथ पारस्परिक उत्पादों भारत-अमेरिकी कारोबार पर शुल्क की कमी और प्रस्तावित शुल्क पर सहमति, कृषि समझौते को तेजी से अंतिम रूप देने की रणनीति दोनों देशों के लिए लाभप्रद होगी।

चुनाव में लिबरल पार्टी की जीत

कनाडा के मतदाताओं ने लिबरल पार्टी में अपना विश्वास जताया है, जिसने एक दशक तक उन पर शासन किया है, और प्रधानमंत्री मार्क कार्नी और उनकी टीम को नाटकीय चुनाव में फिर से सत्ता में लाया है, जिसका उलटा असर एक ऐसे व्यक्ति ने किया जो कनाडा का भी नहीं हैः डोनाल्ड ट्रंप। महज तीन महीने पहले, विपक्षी कंजर्वेटिव पार्टी लिबरल्स पर 20% से अधिक मतों की बढ़त के साथ एक शानदार जीत के लिए तैयार थी। फिर भी, जैसे ही श्री ट्रंप संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति के रूप में सत्ता में आए और कनाडा को उच्च टैरिफ और संभावित विलय की धमकी दी, राजनीतिक माहौल बदल गया। कंजर्वेटिव नेता, पियरे पोलिएवर, जिन्होंने पहले श्री ट्रंप के कुछ लोकलुभावन बातों का प्रचार किया था, अचानक - कई कनाडाई लोगों के लिए - लिबरल्स की तुलना में अमेरिकी राष्ट्रपति के खिलाफ एक कमजोर दावेदार दिखाई दिए, जिन्होंने अपने नेता, पूर्व प्रधान मंत्री जस्टिन ट्रूडो को श्री कार्नी के लिए बदल दिया। श्री ट्रूडो और उसके बाद श्री कार्नी - जो पहले कनाडा और इंग्लैंड के केंद्रीय बैंकों के प्रमुख रह चुके हैं - ने लगातार श्री ट्रम्प के खिलाफ आवाज उठाई, उनके साथ भिड़ंत की, जबकि वे अपने देश के हितों की रक्षा करने की अपनी क्षमताओं में आश्वस्त नजर आए। जनवरी के अंत में चुनावों में लगभग 20% से, हाल के चुनावों में लिबरल्स ने लगभग 44% वोट जीते। अ'२ङ्क र्फी - आर्थिक आशंकाओं के बीच खेती लिबरल पार्टी, जो हाउस ऑफ कॉमन्स में बहुमत के निशान से बस थोड़ा ही पीछे रह गई, को कानून पारित करने के लिए छोटी पार्टियों के समर्थन की आवश्यकता होगी। लेकिन जब तक यह श्री ट्रम्प के खिलाफ कनाडा के मोहरा के रूप में खुद को स्थापित कर सकती है, तब तक उसे वहाँ कोई कठिनाई नहीं होनी चाहिए। कंजर्वेटिव और न्यू डेमोक्रेटिक पार्टी को विनाशकारी हार का सामना करना पड़ा है। उनके नेता, श्री पोलीवरे और जगमीत सिंह, दोनों ने अपनी सीटें खो दीं। श्री कार्नी के लिए, चुनौती अब शुरू होती हैः श्री ट्रम्प के खिलाफ बयानबाजी अभियान के दौरान अच्छी तरह से काम करती थी, लेकिन अमेरिका और कनाडा के बीच शक्ति का संतुलन ऐसा है कि ओटावा के लिए लंबे समय तक वाशिंगटन के साथ टकराव करना आसान नहीं होगा। इसके अलावा, वह सामर्थ्य संकट जिसने बहुत से कनाडाई लोगों को श्री ट्रूडो के खिलाफ कर दिया था, कहीं नहीं गया है। भारत सरकार, जिसके बारे में कुछ रिपोर्टों में कहा गया है कि उसने पहले श्री पोलीवरे का समर्थन किया था, हाल के दिनों में श्री ट्रूडो के साथ बहुत तनावपूर्ण संबंध रहे हैं, खासकर कनाडा के इस आरोप को लेकर कि भारतीय एजेंटों ने 2023 में सिख अलगाववादी हरदीप सिंह निज्जर की हत्या की थी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने श्री कार्नी को बधाई देते हुए प्रभावी रूप से ओटावा को एक नई शुरूआत की पेशकश की है। श्री कार्नी को सकारात्मक प्रतिक्रिया देनी चाहिए।

उच्च पदों की गरिमा की रक्षा करना

भारतीय संविधान के तहत संवैधानिक अधिकारियों के कुछ दायित्व अनिवार्य हैं, जबकि अन्य निहित हैं। कुछ दायित्व समय के साथ विकसित होते हैं और परंपराओं का दर्जा प्राप्त कर लेते हैं। लेकिन किसी भी संवैधानिक पदाधिकारी को इस तरह से कार्य करने का विवेक नहीं है जो किसी अन्य संवैधानिक प्राधिकरण को उसके संप्रभु कार्यों का निर्वहन करने से रोकता है। 17 अप्रैल को संसद में कुछ प्रशिक्षुओं को संबोधित करते हुए उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने सुप्रीम कोर्ट के एक फैसले पर बयान दिया जिसमें जस्टिस जे बी पारदीवाला और आर महादेवन ने राष्ट्रपति द्वारा राज्य विधानसभाओं द्वारा पारित विधेयकों पर हस्ताक्षर करने के लिए समयसीमा निर्धारित की थी। यह तमिलनाडु विधानसभा द्वारा पारित विधेयकों को मंजूरी न देने में राज्यपाल की निष्क्रियता के संदर्भ में था। यह सवाल संविधान के अनुच्छेद 200 के संदर्भ में उठा, जिसमें कहा गया है, ₹जब किसी राज्य की विधान सभा द्वारा कोई विधेयक पारित कर दिया जाता है, या विधान परिषद वाले राज्य के मामले में, राज्य विधानमंडल के दोनों सदनों द्वारा पारित कर दिया जाता है खेती तो उसे राज्यपाल के समक्ष प्रस्तुत किया जाएगा, और राज्यपाल या तो यह घोषित करेगा कि वह विधेयक पर अपनी सहमति देता है, या वह अपनी सहमति रोक लेता है, या वह विधेयक को राष्ट्रपति के विचार के लिए सुरक्षित रखता है।₹ अनुच्छेद 200 में कोई समय-सीमा निर्धारित नहीं की गई है जिसके भीतर राज्यपाल को सहमति देनी है या रोक लेनी है, या विधेयक को राष्ट्रपति के विचार के लिए सुरक्षित रखना है। हालांकि, अनुच्छेद 200 के प्रावधान में यह प्रावधान है कि ₹राज्यपाल, स्वीकृति के लिए विधेयक प्रस्तुत किए जाने के बाद यथाशीघ्र विधेयक को वापस कर सकते हैं, यदि यह धन विधेयक नहीं है, साथ ही एक संदेश भी भेज सकते हैं जिसमें अनुरोध किया गया हो कि सदन विधेयक या उसके किसी निर्दिष्ट प्रावधान पर पुनर्विचार करेगा और ऐसे किसी संशोधन को प्रस्तुत करने की वांछनीयता पर विचार करेगा जिसकी सिफारिश वह अपने संदेश में कर सकते हैं और जब विधेयक इस प्रकार वापस किया जाता है, तो सदन या सदन तदनुसार विधेयक पर पुनर्विचार करेंगे और यदि विधेयक को सदन या सदनों द्वारा संशोधन के साथ या बिना संशोधन के पुनः पारित किया जाता है और राज्यपाल के समक्ष स्वीकृति के लिए प्रस्तुत किया जाता है, तो राज्यपाल उस पर स्वीकृति नहीं रोकेंगे₹। मूक संकट इससे स्पष्ट रूप से पता चलता है कि राज्यपाल उस विधेयक के बारे में सदन को संदेश भेजने के लिए बाध्य हैं जिस पर वह यथाशीघ्र स्वीकृति नहीं देते हैं। अब, न्यायालय के समक्ष यह प्रश्न उठा कि क्या राज्यपाल संवैधानिक कानून के मामले में, विधेयक पर स्वीकृति दिए बिना या अपनी सिफारिशों के साथ सदन को संदेश भेजे बिना उस पर बैठने के हकदार हैं। जाहिर है, भले ही प्रावधान में कोई समयसीमा नहीं दी गई है, लेकिन राज्यपाल के कार्यों के निर्वहन में यह अंतर्निहित है कि वह विधेयक को अंतहीन रूप से रोक कर नहीं रख सकते। यह स्पष्ट है कि एक अनिर्वाचित संवैधानिक प्राधिकारी, जो संविधान के तहत अपने विवेक से किए जाने वाले कार्यों को छोड़कर, विशुद्ध रूप से कार्यकारी कार्य करता है, जो कि ज्यादातर औपचारिक कार्य होते हैं, उसे यह सुनिश्चित करना चाहिए कि उसके कार्य संप्रभु विधायिका द्वारा पारित विधानों को प्रभावी करने में बाधा न बनें।

यदि वह ऐसा करता है, तो न्यायालय के पास एकमात्र विकल्प यह है कि वह यह सुनिश्चित करने के लिए एक उचित प्रक्रिया प्रदान करे कि राज्यपाल राज्य की संप्रभु विधायिका की इच्छा को लागू करने के लिए शीघ्रता से कार्य करें।जब ब्रिटिश सत्ता में थे, उस अवधि के दौरान विधानों के इतिहास का उल्लेख करने और इसके विकास का विश्लेषण करने के बाद, न्यायालय इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि राज्यपाल को, इस संदर्भ में, विधान सभा के अध्यक्ष द्वारा विधेयक प्रस्तुत किए जाने के 3 महीने से अधिक समय बाद अपने संवैधानिक कार्यों का निर्वहन तत्परता से करना चाहिए। अनुच्छेद 200 का दूसरा प्रावधान यह भी निर्धारित करता है कि यदि राज्यपाल राष्ट्रपति के विचार के लिए कोई विधेयक सुरक्षित रखता है, जो उसकी राय में, यदि वह कानून बन जाता है, तो उच्च न्यायालय की शक्तियों से इस प्रकार वंचित हो जाता है कि वह उस पद को खतरे में डाल देता है, जिसे भरने के लिए न्यायालय को इस संविधान द्वारा डिजाइन किया गया है। इसका अर्थ यह है कि राष्ट्रपति के विचार के लिए किसी विधेयक को सुरक्षित रखने में राज्यपाल की सीमित शक्ति संविधान के तहत न्यायालय की स्थिति को खतरे में डालने से संबंधित है। सवाल यह उठता है कि क्या ऐसी स्थिति में राष्ट्रपति को इस तथ्य को देखते हुए तत्परता से कार्य करना चाहिए कि एक संप्रभु विधायिका ने विधेयक पारित किया है।यह सुनिश्चित करने के लिए सहयोगात्मक प्रक्रियात्मक तंत्र स्थापित किए जाने चाहिए कि प्रत्येक संस्था और प्राधिकरण संविधान के अक्षर और भावना के अनुसार कार्य करें, दूसरों के कामकाज में बाधा डाले बिना; और भी अधिक इसलिए क्योंकि संघवाद संविधान की मूल संरचना का हिस्सा है। जहाँ तक राष्ट्रपति की स्थिति का सवाल है, जब राष्ट्रपति को विधेयक स्वीकृति के लिए प्राप्त होता है, तो राष्ट्रपति मंत्रिपरिषद की सहायता और सलाह पर कार्य करता है।

अनुच्छेद 200 का दूसरा प्रावधान राष्ट्रपति को अपनी व्यक्तिगत क्षमता में कार्य करने का कोई विवेकाधिकार नहीं देता है। इसलिए, उपराष्ट्रपति के लिए यह सार्वजनिक रूप से कहना अनावश्यक था कि न्यायालय राष्ट्रपति की शक्तियों पर अंकुश नहीं लगा सकता।यह संवैधानिक कानून का एक स्वीकृत सिद्धांत है कि राष्ट्रपति मंत्रिपरिषद की सहायता और सलाह पर कार्य करता है।

नितंबों का आकार बढ़ाने की प्रक्रिया कितनी खतरनाक? ट्रीटमेंट के 24 घंटे के भीतर हुई मौत से उठे सवाल

सितंबर 2024 की एक सुबह एलिस वेब एक किराए के ब्यूटी सैलून में बनी अस्थायी क्लिनिक में पहुँची थीं. वह बिना सर्जरी वाली ब्राजीलियन बट लिफ्ट यानी बीबीएल प्रक्रिया करवाना चाहती थीं.इस प्रक्रिया में नितंबों में बड़ी मात्रा में डर्मल फि लर इंजेक्ट किए जाते हैं. एलिस को उम्मीद थी कि दोपहर तक उनका इलाज पूरा हो जाएगा. वह बच्चों को स्कूल से लेने भी जा सकेंगी.लेकिन 33 वर्षीय एलिस कभी घर नहीं लौट सकीं. पाँच बच्चों की माँ एलिस की इस उपचार के 24 घंटे के भीतर ही मौत हो गई.वह बिना सर्जरी वाली बीबीएल प्रक्रिया के बाद मौत होने के मामले में ब्रिटेन की पहली व्यक्ति बन गईं. उनकी मौत की वजह का पता लगाने के लिए औपचारिक जांच की जाएगी.

एलिस का मामला अब ब्रिटेन के तेजी से बढ़ रहे सौंदर्य उद्योग पर बहस का केंद्र बन गया है. शरीर की बनावट बदलने वाले कॉस्मेटिक इंजेक्शन अब बहुत आसानी से उपलब्ध हैं.ये सेवाएँ बड़े बाजारों के ब्यूटी सैलून से लेकर किराए के दफ़्तरों और होटल के कमरों तक दी जा रही हैं. पिछले दो साल से हम इस उद्योग की जाँच कर रहे हैं. मैंने अपनी पहचान छिपाकर यह जानने की कोशिश की कि आखिर ऐसे क्लिनिकों के बंद दरवाजों के पीछे क्या हो रहा है? मुझे ऐसे लोग मिले जो अस्थायी उपचार कक्षों में मेरे शरीर में सैकड़ों मिलीलीटर फि लर भरने के लिए तैयार थे. कुछ लोगों ने बिना उचित मेडिकल सलाह के मुझे ऐसी दवाएँ देने की पेशकश की, जो केवल डॉक्टर के पर्चे पर मिलनी चाहिए.इतना ही नहीं, मुझे सोशल मीडिया के जरिए बिना लेबल वाले वजन घटाने के इंजेक्शन भी बेचने की कोशिश की गई. उन्होंने बताया कि जिन कॉस्मेटिक इंजेक्शनों को कम जोखिम वाला और लगभग दर्दरहित बताया गया था, उनके कारण उन्हें गंभीर पीड़ा झेलनी पड़ी. कुछ महिलाओं को संक्रमण हो गया. इसके बाद उन्हें अस्पताल में भर्ती कराना पड़ा.

कॉस्मेटिक उपचारों को मान्यता देने वाली संस्था 'सेव फेस' का कहना है कि उसके सामने गंभीर नुकसान के कई मामले आए हैं. इनमें एक ऐसी मरीज भी शामिल है जिसकी पलक की सर्जरी गलत तरीके से हुई. उसके बाद वह अपनी आँखें पूरी तरह बंद नहीं कर पाती हैं.एक अन्य मामले में लिपोसक्शन यानी शरीर की अतिरिक्त चर्बी हटाने की कॉस्मेटिक सर्जरी के दौरान मरीज की आंत में छेद हो गया.'सेव फेस' की निदेशक एश्टन कॉलिन्स कहती हैं, यह सब किसी डरावनी फि ल्म की कहानी जैसा लगता है.उनका कहना है कि ऐसी प्रक्रियाएँ मुख्य बाजारों में खुलेआम की जा रही हैं. कॉस्मेटिक इंजेक्शन के मामले में ब्रिटेन यूरोप के सबसे कम रेग्युलेटेड बाजारों में शामिल है. यूरोप के कई देशों के मुकाबले ब्रिटेन में नियम काफी ढीले हैं. वहाँ कोई भी व्यक्ति प्रशिक्षण लेकर कानूनी रूप से डर्मल फि लर के इंजेक्शन देना शुरू कर सकता है. इसके बाद वह आम लोगों को यह उपचार दे सकता है. स्कॉटलैंड और इंग्लैंड की सरकारों का कहना है कि वे इस अरबों पाउंड के उद्योग पर नियमों को और सख़्त बना रही हैं. लेकिन सवाल यह है कि क्या ये कदम काफी साबित होंगे? विशेषज्ञ एक दशक से ज्यादा समय से डर्मल फि लर से जुड़े संभावित संकट की चेतावनी दे रहे हैं. फिर भी आज तक लोग ऐसे नुकसान का शिकार क्यों हो रहे हैं, जिसे टाला जा सकता था?

बता दें कि डर्मल फिलर्स ऐसे इंजेक्शन होते हैं जो झुर्रियों को कम करते हैं और चेहरे की ढीली त्वचा में वॉल्यूम वापस लाते हैं.

साल 2024 के जून में जोआन नाम की एक महिला एसेक्स के एक फ़्लैट में बने अस्थायी क्लीनिक में बिना सर्जरी वाली बीबीएल प्रक्रिया करवाने गई थीं. जोआन सिर्फ. अपना पहला नाम ही सार्वजनिक करना चाहती हैं. तब उन्हें लगा था कि तुर्की जाकर सर्जरी के जरिए बीबीएल करवाने के मुकाबले यह तरीका कम जोखिम भरा होगा.दक्षिण वेल्स में रहने वाली दो बच्चों की माँ जोआन कहती हैं, मैं सिर्फ. अपने नितंबों को अधिक उभरा हुआ आकार देना चाहती थी.वह कहती हैं, मुझे वहाँ से तुरंत लौट जाना चाहिए था.इलाज के दौरान उनके शरीर में एक लीटर फि लर इंजेक्ट किया गया. बाद में उन्हें सेप्सिस हो गया.उनकी हालत इतनी गंभीर हो गई कि उन्हें अस्पताल में भर्ती कराना पड़ा.जोआन कहती हैं कि दो साल बाद भी इस उपचार के निशान उनकी जाँघों और नितंबों पर मौजूद हैं.

एक समय ऐसा था जब कॉस्मेटिक इंजेक्शनों को मुख्य रूप से संपन्न और मध्यम आयु के लोगों से जोड़ा जाता था.

ईरान के खिलाफ जंग में उतरने को लेकर सऊदी अरब की क्या दुविधा है

सऊदी अरब इस समय एक मुश्किल दुविधा का सामना कर रहा है.28 फरवरी को अमेरिका और इसराइल के ईरान के खिलाफ युद्ध शुरू किए जाने के बाद से सऊदी अरब ने ज्यादातर खुद को इससे दूर रखने की कोशिश की है.लेकिन अब, तीन तरफ से हमलों का सामना करने के बाद सऊदी अरब का सब्र जवाब दे चुका है. इस हफ़्ते उसने अमेरिका के साथ मिलकर इराक में मौजूद ईरान समर्थित मिलिशिया समूहों पर संयुक्त हमले किए.सऊदी अरब का मानना है कि ये समूह ड्रोन हमलों के जरिए उसके देश को निशाना बना रहे थे. अब सऊदी अरब के सामने यह सवाल है कि क्या वह विरोधियों को डराने और रोकने के लिए जवाबी हमले जारी रखे, या फिर तनाव कम करने की कोशिश करे.

तनाव घटाने के लिए वह अपने कुछ विरोधियों के साथ समझौता करने या उन्हें किसी तरह संतुष्ट करने का रास्ता भी अपना सकता है. तो आखिर किस पर कौन हमला कर रहा है और इसकी वजह क्या है?

पहले थोड़ा संदर्भ समझ लेते हैं. पिछले पाँच महीनों से खाड़ी क्षेत्र और मध्य पूर्व के दूसरे हिस्सों को प्रभावित कर रहे इस संघर्ष में मोटे तौर पर दो पक्ष हैं.एक तरफ ईरान और उसकी इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड्स कोर (आईआरजीसी) हैं. उनके साथ यमन के हूती भी हैं. हूती एक कबायली समूह है, जिसने 2014 में यमन के बड़े हिस्से पर कब्जा कर लिया था.इराक में 'पॉप्युलर मोबिलाइजेशन फोर्सेज' नाम का एक अर्धसैनिक समूह भी है, जिसे ईरान का समर्थन हासिल है.आरोप है कि इस समूह ने सऊदी अरब पर 30 ड्रोन हमले किए हैं, और अब उसी पर जवाबी हमला किया गया है.

ईरान के पक्ष में लेबनान में हिज्बुल्लाह भी है. यह संगठन अब भी काफी ताकतवर माना जाता है, लेकिन फि लहाल उसने खुद को अपेक्षाकृत शांत रखा हुआ है. इस संघर्ष के दूसरे पक्ष में अमेरिका है, जिसकी केंद्रीय कमान (सेंटकॉम) की सेनाएं बेहद शक्तिशाली हैं. साथ ही खाड़ी अरब देश और जॉर्डन भी अलग-अलग स्तर पर इसमें शामिल हैं.युद्ध में इसराइल, अमेरिका का करीबी सहयोगी बना हुआ है. पर फि लहाल वह इस युद्ध में सक्रिय रूप से भाग नहीं ले रहा है.हाल ही में ईरान ने अपने ड्रोन और मिसाइल हमलों को जॉर्डन, कुवैत और बहरीन पर केंद्रित किया है.

साथ ही उसने उन सभी कमर्शियल जहाजों को निशाना बनाया है जो ईरान के नए नियमों और मार्गों से बचते हुए होर्मुज स्ट्रेट से निकलने की कोशिश करते हैं.यमन में इराकी मिलिशिया और हुती विद्रोहियों का शामिल होना एक अपेक्षाकृत नई घटना है.

मोरक्को से हजारों प्रवासी तैरकर स्पेन के स्यूटा एन्क्लेव पहुँचे, यूरोप में तीखी प्रतिक्रिया

मोरक्को से स्पेन के उत्तरी अफ़्रीकी एन्क्लेव स्यूटा में पिछले एक हफ़्ते में हजारों प्रवासी पहुँचे हैं. यह बात उस क्षेत्र के एक नेता ने कही है.जुआन जीसस विवाज ने कहा कि बड़ी संख्या में लोगों के आने से संसाधन लाचार दिख रहे हैं.उन्होंने स्पेन सरकार से हस्तक्षेप करने का आग्रह किया. समाचार एजेंसी रॉयटर्स के अनुसार, स्पेन के गृह मंत्री फर्नांडो ग्रांडे-मार्लास्का शुक्रवार को इस इलाके में दौरा कर सकते हैं.

वीडियो फुटेज में साफ दिख रहा है कि गुरुवार को प्रवासी हवा से भरे छल्लों और अन्य तैरने वाले उपकरणों का इस्तेमाल करके स्यूटा आ रहे हैं. दूसरी तरफ अन्य लोग बॉर्डर पर लगी बाड़ में एक गेट से भागे.मोरक्को के उत्तरी तट पर स्थित स्यूटा, जिब्राल्टर स्ट्रेट के पार मुख्य भूमि स्पेन से अलग है और लंबे समय से यूरोप पहुँचने की कोशिश करने वाले प्रवासियों के लिए एक प्रमुख एंट्री पॉइंट रहा है. इस महीने की शुरूआत में देश की सर्वोच्च अदालत ने फैसला दिया था कि समुद्र के रास्ते स्यूटा या मेलिला पहुँचने की कोशिश के दौरान पकड़े गए प्रवासियों को बिना किसी कानूनी प्रक्रिया के सीधे मोरक्को वापस नहीं भेजा जा सकता. स्पेन के गृह मंत्रालय ने कहा कि उनका मानना है कि मानव तस्करी में शामिल नेटवर्क इस फैसले का फायदा उठाकर ₹बिना दस्तावेज वाले प्रवासियों, खासकर युवाओं, को इस रास्ते आने के लिए प्रोत्साहित कर रहे हैं.मंत्रालय ने कहा कि स्पेन और मोरक्को सभी मुद्दों पर, जिनमें प्रवासन भी शामिल है, सहयोग करते हैं. दोनों देशों ने इस समस्या से निपटने की कोशिश और तेज करने पर सहमति जताई है, जिसमें स्यूटा में अवैध रूप से प्रवेश करने वाले सभी लोगों को जल्द से जल्द मोरक्को को सौंपना भी शामिल है. मोरक्को से प्रवासियों के आने की संख्या को लेकर अलग-अलग दावे किए जा रहे हैं. कुछ रिपोर्टों में संख्या सैकड़ों में बताई गई है, जबकि कुछ में हजारों.रॉयटर्स के अनुसार, स्पेन के मीडिया ने अनुमान लगाया कि गुरुवार को 2,000 से 3,000 लोगों ने स्यूटा में प्रवेश किया. हालांकि, स्पेन की पैरा मिलिट्री पुलिस गार्डिया सिविल ने इस संख्या की पुष्टि नहीं की.वहीं, स्पेन के पब्लिक ब्रॉडकास्टर आरटीवीई ने बताया कि दिनभर में सैकड़ों लोग इस क्षेत्र में दाखिल हुए.उसकी रिपोर्ट के अनुसार, पिछले दो सप्ताह में 1,500 से अधिक लोग, जिनमें अधिकांश युवा मोरक्कोवासी थे, स्यूटा पहुँच चुके हैं. आरटीवीई के अनुसार, स्यूटा के प्रमुख जुआन विवास ने कहा कि हाल के महीनों में समुद्र से 60 लोगों के शव बरामद किए गए हैं.रॉयटर्स के मुताबिक, उन्होंने यह भी कहा कि यह क्षेत्र मानवीय और सुरक्षा संकट का सामना कर रहा है.

भारतीय हॉकी टीम की जर्सी का रंग केसरिया होने पर विवाद, पूर्व कप्तान ने कहा 'शर्मनाक

नीदरलैंड्स और बेल्जियम में आगामी एफआईएच विश्व कप से पहले भारतीय हॉकी टीम की नई जर्सी के रंग को लेकर विवाद खड़ा हो गया है.हॉकी इंडिया ने पुरुष और महिला दोनों टीमों के लिए पारंपरिक नीले रंग की जगह केसरिया रंग की नई जर्सी पेश की जिस पर पूर्व कप्तान विरन रस्किन्हा और परगट सिंह ने सवाल उठाए हैं.नीले से केसरिया रंग में इस अचानक बदलाव के बाद सोशल मीडिया और खेल जगत में भी बहस शुरू हो गई है.हालांकि हॉकी इंडिया ने इसे तकनीकी जरूरत बताते हुए बचाव किया है.हॉकी इंडिया ने सोशल मीडिया पर नई जर्सी जारी करते हुए कहा कि इसके डिजाइन और रंग का मकसद 'एक कहानी कहना' और 'भारत का गौरव' दिखाना है.हॉकी इंडिया ने नई जर्सी को पेश करते हुए एक वीडियो जारी किया है. हॉकी इंडिया के वीडियो में केसरिया (भगवा) रंग को साहस, बलिदान और जीत का चिह्न बताया गया है. इस रंग को भारत के झंडे और उगते सूरज से प्रेरित बताया गया है और कहा गया है कि यह नई शुरूआत का संकेत है.जर्सी के मध्य भाग में एक डिजाइन है जिसे मंडला कहा गया है जिसे भारत के समृद्ध सांस्कृतिक विरासत से प्रेरित बताया गया है.

कॉकरोच जनता पार्टी ने दावा किया था कि मोदी सरकार ने उनसे बातचीत में आश्वासन दिया था कि प्रदर्शन में शामिल किसी भी विद्यार्थी के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं की जाएगी और सभी एफआईआर वापस ली जाएंगी.गले और बांह पर डीप नेवी ब्लू रंग की एक पतली पट्टी है, जो अशोक चक्र से प्रेरित है जो प्रगति, शांति और फोकस का प्रतीक है.जर्सी के ऊपरी हिस्से में चेस्ट ग्राफि क है जिसे सुदर्श चक्र की आधुनिक व्याख्या बताया गया है, इसे शक्ति, एकता और गति का प्रतीक कहा गया है.जर्सी में गले से कंधे तक तिरंगे की एक पट्टी है जिसे ट्राईकलर पाइपिंग (भगवा, सफेद और हरा) कहा गया है. इसको राष्ट्रीय गर्व का प्रतीक बताया गया है.जर्सी के बीच अंग्रेजी में इंडिया लिखा गया है जो देवनागिरी लिपि से प्रभावित है और कहा गया है कि यह भाषाई और सांस्कृतिक विविधता को दिखाता है.पूर्व पुरुष हॉकी टीम के पूर्व कप्तानों परगट सिंह और वीरेन रस्किन्हा ने हॉकी इंडिया के फैसले पर सवाल उठाए हैं. रस्किन्हा ने इसे 'शर्मनाक' बताया है.पूर्व कप्तान और ओलंपियन वीरेन रस्किन्हा ने इस फैसले का विरोध करते हुए दशकों पुरानी खेल परंपरा को छोड़ने के पीछे की वजह पर सवाल उठाया.उन्होंने एक्स पर लिखा, मैं मानता हूं कि हॉकी इंडिया ने भारतीय हॉकी के लिए कई अच्छे काम किए हैं, लेकिन यह शर्मनाक है. भारतीय टीम की विरासत और पहचान हमेशा नीली रही है. मैंने कई वर्षों तक गर्व के साथ नीली जर्सी पहनी है. प्रशंसक भी भारतीय टीम को नीली जर्सी में देखना चाहते हैं. आखिर नारंगी रंग का तर्क क्या है?पुरुष हॉकी टीम के एक और पूर्व कप्तान परगट सिंह ने भी खेल पर विचारधारा थोपने के आरोप लगाए.परगट सिंह पद्मश्री और अर्जुन पुरस्कार से सम्मानित हैं. जालंधर कैंट से कांग्रेस के विधायक हैं. परगट सिंह पंजाब के पूर्व शिक्षा और खेल मंत्री रहे हैं.उन्होंने समाचार एजेंसी एएनआई से कहा, दशकों से हॉकी इंडिया की टीम गर्व के साथ नीली जर्सी पहनती रही है, और यह रंग हमारी खेल पहचान का हिस्सा बन चुका है. इसे केसरिया रंग में बदलना भारतीय जनता पार्टी सरकार की उस सोच को दशार्ता है, जिसमें हर जगह अपनी विचारधारा थोपने की कोशिश दिखाई देती है.

परगट सिंह ने कहा, खेलों का राजनीतिकरण करने के बजाय बेहतर बुनियादी ढांचा, विश्वस्तरीय प्रशिक्षण और खिलाड़ियों को अधिक समर्थन देने पर ध्यान देना चाहिए. खेलों को राजनीति से दूर रखें. खेल का कोई धर्म या जाति नहीं होती, केवल खेल भावना होती है.उधर, हॉकी इंडिया ने जर्सी के नए रंग के पीछे तकनीकी आधार का हवाला दिया है.हॉकी इंडिया ने कहा,मुख्य विचार तकनीकी था. नीली खेल जर्सी अक्सर नीले सिंथेटिक मैदान में घुल-मिल जाती थी, जो अब अंतरराष्ट्रीय हॉकी पिचों का मानक रंग है. इससे खिलाड़ियों के लिए मैदान पर स्पष्टता और दृश्यता प्रभावित होती थी.हॉकी इंडिया का कहना है कि जर्सी को खिलाड़ियों और सपोर्ट स्टाफ से सलाह-मशविरा करने के बाद अंतिम रूप दिया गया है. हॉकी इंडिया के मुताबिक, केसरिया रंग साहस, बलिदान और जीत का प्रतीक है.हॉकी इंडिया ने एक बयान में कहा, यह पाया गया था कि नीले रंग की जर्सी अंतरराष्ट्रीय हॉकी में अब मानक बन चुकी नीली सिंथेटिक पिच के साथ घुल-मिल जाती है.हॉकी इंडिया ने कहा, इस वजह से खिलाड़ियों के लिए मैदान पर चीजों को साफ तौर पर देखना और पहचानना प्रभावित हो रहा था. इसी वजह से भारतीय टीम के लिए केसरिया जर्सी को अपनाने का फैसला किया गया है.हॉकी इंडिया के अध्यक्ष दिलीप टिर्की ने एएनआई से बातचीत में कहा कि 2014 विश्व कप में पीली जर्सी और 2018 में आसमानी नीले डिजाइन का इस्तेमाल पहले भी किया जा चुका है, इसलिए जर्सी के रंग में बदलाव कोई नई बात नहीं है.वहीं वीरेन रस्किन्हा ने एक्स पर एक अलग पोस्ट में स्पष्ट किया कि वह इस मुद्दे को राजनीतिक रंग नहीं देना चाहते. उन्होंने लिखा, मैं इस पर कई अनावश्यक राजनीतिक टिप्पणियां देख रहा हूं. मैं उसमें नहीं पड़ना चाहता. मेरा सीधा और विनम्र मुद्दा केवल गर्व, पहचान और विरासत का है कांग्रेस सांसद प्रियंका गांधी ने हॉकी इंडिया की ओर से जर्सी के रंग में बदले जाने को इतिहास फिर से लिखे जाने की कोशिश कहा है.संसद परिसर में पत्रकारों से उन्होंने कहा, ₹चाहे वे यूनिफॉर्म बदलें या शिक्षा नीति के जरिए इतिहास को फिर से लिखने की कोशिश करें, वे कुछ भी करें, इस देश के युवाओं ने अपनी राय साफ कर दी है. आपने देखा कि जंतर-मंतर पर जमा युवा क्या कह रहे थे? वही देश की आवाज है.भारत की आजादी की लड़ाई अहिंसा और सच्चाई पर आधारित थी, और इसमें आरएसएस की कोई भूमिका नहीं थी. पूरा देश यह सच्चाई जानता है, और जो लोग नहीं जानते थे, वे भी अब उनके इरादों को समझने लगे हैं. ओडिशा के पूर्व मुख्यमंत्री नवीन पटनायक ने हॉकी इंडिया पर खेल के राजनीतिकरण का आरोप लगाया है.उन्होंने एक्स पर एक लंबी पोस्ट में लिखा, मुझे यह जानकर गहरा दुख और पीड़ा हुई है

गैरी सोबर्स: 12 उंगलियां, एक ओवर में छह छक्के और 365 रन की पारी को कौन भूल सकता है

बाएं हाथ के बेहद आकर्षक बल्लेबाज सोबर्स ने 1958 में पाकिस्तान के खिलाफ नाबाद 365 रन बनाए थे. यह पारी 36 वर्षों तक टेस्ट क्रिकेट का सर्वोच्च व्यक्तिगत स्कोर रही

इमेज कैप्शन,बाएं हाथ के बेहद आकर्षक बल्लेबाज सोबर्स ने 1958 में पाकिस्तान के खिलाफ नाबाद 365 रन बनाए थे. यह पारी 36 वर्षों तक टेस्ट क्रिकेट का सर्वोच्च व्यक्तिगत स्कोर रही क्रिकेट जगत के महान ऑलराउंडर सर गैरी सोबर्स ने जब होश संभाला तो अपने दोनों हाथों में पांच-पांच अंगुलियां और एक-एक अंगूठा देखकर वे जरा भी परेशान नहीं हुए. सोबर्स ने अपनी जीवनी के पहले अध्याय में इसका विस्तार से उल्लेख किया है. वह लिखते हैं कि ₹निश्चित रूप से बहुत से लोग यह दावा करते हैं कि मेरी कि स्मत इसीलिए बहुत अच्छी थी, क्योंकि मेरे हाथों में दो उंगलियां ज्यादा थी.यह उनकी अपनी सोच तो हो सकती है, लेकिन मैंने इसके बारे में कभी भी ज्यादा नहीं सोचा था. दोनों हाथों में छह-छह उंगलियों की वजह से मुझे कोई परेशानी नहीं हुई और न ही मेरा कोई काम रुका.उनका कहना है कि वेस्टइंडीज में अभी भी बहुत से लोग असामान्य शारीरिक बनावट वाले हैं. मैं खुद एक ऐसे वेस्टइंडीज के नागरिक से मिला हूं, उसे भी मेरी तरह दोनों हाथों में अतिरिक्त उंगलियां थीं. गैरी सोबर्स ने ये दो अतिरिक्त उंगलियां हमेशा अपने साथ नहीं रहने दी थीं. जब वे नौ या दस वर्ष के थे, तब एक हाथ की अतिरिक्त उंगली को किसी धारदार हथियार पर रखकर काट दिया था. जबकि दूसरे हाथ की अतिरिक्त उंगली को तेजधार चाकू से काट दिया था, उस समय उनकी उम्र पंद्रह वर्ष थी.सर गैरी सोबर्स का जन्म 28 जुलाई 1936 को ब्रिजटाउन में हुआ था. उनके पिता कैनेडियन मर्चेंट नेवी में थे. सोबर्स केवल पाँच वर्ष के थे जब जर्मनों ने उनके पिता की नाव को एक हमले में डुबो दिया था.क्रिकेट सोबर्स का पहला शौक था जो जुनून बन गया. वह आठ साल के थे जब वह बारबाडोस के वांडरर्स ग्राउंड में स्कोरबोर्ड पर स्कोरिंग करते थे.स्कोरिंग का फायदा यह हुआ कि उन्होंने उस युग के सभी महान क्रिकेटरों को अपने सामने खेलते हुए देखा, जिनमे विशेष रूप से फ्रैंक वारल, क्लाइड वालकॉट और

एवर्टन वीक्स शामिल थे.उनका करियर वांडरर्स के दो मैदानों में फ्रैंक ग्रांट और बर्गेस ग्रैंडिसन से काफी प्रभावित था. वह पिच तैयार करने में उन दोनों की मदद करते थे जिसके बदले में उन्हें मैदान पर खेलने की अनुमति मिल जाती थी.

बर्गेस ने गैरी सोबर्स की क्षमता को देखा और वेस्टइंडीज के कप्तान डेनिस एटकिंसन को इस बारे में बताया, जिन्होंने सोबर्स को अपने साथ अभ्यास करने का मौका दिया.गैरी सोबर्स से जब इंग्लिश काउंटी नॉटिंघमशायर ने कॉन्ट्रेक्ट किया तो इस पर वो बहुत खुश थे. उनके अनुसार, अगर पांच हजार पाउंड प्रति सीजन, आवास, गाड़ी और बारबाडोस जाने का टिकट मिल जाए तो इससे बेहतर और क्या हो सकता था.उन्होंने कहा कि वह साल 1968 से पहले ही काउंटी क्रिकेट खेल सकते थे, लेकिन काउंटी खेलने के योग्य होने के लिए दो साल इंग्लैंड में रहना और अपने देश का प्रतिनिधित्व न करना उन्हें बिलकुल भी स्वीकार नहीं था.वैसे तो सर गैरी सोबर्स ने काउंटी क्रिकेट में कई शानदार पारियां खेली, लेकिन अपने पहले ही सीजन में स्वानजी में ग्लैमरगन के खिलाफ नाबाद 76 रन की उनकी पारी को हमेशा एक खास वजह से याद किया जाता है.यह वही पारी है, जिसमें सोबर्स ने एक ही ओवर में छह छक्के लगाए थे. प्रथम श्रेणी क्रिकेट में इससे पहले कभी ऐसा नहीं हुआ था, कि किसी बल्लेबाज ने एक ओवर की सभी गेंदों पर छक्के लगाए हों.

सोबर्स की इस 'आक्रामकता' का शिकार होने वाले बद-कि स्मत गेंदबाज मैल्कम नैश थे जो एक लेफ्ट-आर्म मीडियम पेसर थे, लेकिन उस मैच में कप्तान टोनी लुईस ने उन्हें स्पिन गेंदबाजी करने के लिए कहा था.सोबर्स का पहला छक्का डीप मिडविकेट बाउंड्री की तरफ गया. दूसरा छक्का डीप स्क्वायर लेग की तरफ लगाया. तीसरी गेंद पर सोबर्स ने सीधा बिलकुल सामने छक्का लगाया. चौथी गेंद पर छक्के की दिशा डीप फाइन लेग की तरफ थी. पांचवीं गेंद पर रोजर डेविस ने लॉन्ग ऑफ बाउंड्री पर कैच तो लपक लिया लेकिन अपना संतुलन बरकरार नहीं रख सके और बाउंड्री के बाहर गिर गए. इसके बाद आखिरी गेंद को सोबर्स ने डीप स्क्वेयर लेग के बाहर पहुंचा कर इतिहास रच दिया.अंतिम छक्के पर गेंद बाउंड्री के बाहर चली गई थी. ग्यारह वर्षीय रिचर्ड लुईस को ये गेंद पास के बगीचे में मिली, जो उन्होंने क्रिकेट कमेंटेटर वुल्फ वूलर को सौंप दिया, जिन्होंने इसे नॉटिंघमशायर काउंटी तक पहुंचा दिया और इस तरह यह गेंद नॉटिंघमशायर काउंटी के संग्रहालय का हिस्सा बन गई.सर गैरी सोबर्स कहते हैं, कि "मेरे छह छक्कों की वीडियो रिकॉर्डिंग सुरक्षित रखने का भी एक दिलचस्प कि स्सा है. वुल्फ वूलर बीबीसी टीवी के लिए कमेंट्री कर रहे थे. जब मैंने पहला छक्का मारा तो निमार्ता ने उनसे कहा कि मैच को आगे रिकॉर्ड करने के बजाय आपको स्टूडियो में वापसी की घोषणा करनी है,

रायगढ़ में बंदरों ने कई लोगों को काटा, हाथियों के झुंड ने किया सड़क जाम

रायगढ़। छत्तीसगढ़ के रायगढ़ जिले में इन दिनों वन्यजीवों का बढ़ता आतंक ग्रामीणों के लिए बड़ी चिंता का कारण बन गया है। जिले के अलग-अलग इलाकों में एक ओर बंदरों ने लोगों पर हमला कर दहशत फैला दी है, तो दूसरी ओर हाथियों के झुंड ने सड़क पर कब्जा जमाकर यातायात बाधित कर दिया। बंदरों के हमलों में अब तक एक दर्जन से अधिक लोग घायल हो चुके हैं, जबकि हाथियों की गतिविधियों के कारण कई गांवों में भय का माहौल है। स्थिति को देखते हुए वन विभाग ने लोगों के लिए अलर्ट जारी किया है और प्रभावित क्षेत्रों में लगातार निगरानी रखी जा रही है। जानकारी के अनुसार पहला मामला रायगढ़ जिले के चिराईपानी गांव का है। अ'२ङ्क

जहां पिछले कुछ दिनों से बंदरों का आतंक लगातार बढ़ता जा रहा है। ग्रामीणों का आरोप है कि बंदर घरों में घुसकर उत्पात मचा रहे हैं और लोगों पर अचानक हमला कर रहे हैं। अब तक बंदरों के हमले में एक दर्जन से अधिक लोग घायल हो चुके हैं। शुक्रवार सुबह भी बंदरों ने एक महिला समेत दो लोगों पर हमला कर उन्हें गंभीर रूप से घायल कर दिया। घायलों को इलाज के लिए अस्पताल पहुंचाया गया, जहां उनका उपचार जारी है। ग्रामीणों का कहना है कि बंदरों की आक्रामक गतिविधियों के संबंध में कई बार वन विभाग को सूचना दी गई, लेकिन अब तक कोई ठोस कार्रवाई नहीं की गई।

इसके चलते गांव के लोगों में लगातार डर का माहौल बना हुआ है। बच्चे, बुजुर्ग और महिलाएं घरों से बाहर निकलने में भी डर महसूस कर रहे हैं। लोगों ने वन विभाग से जल्द से जल्द बंदरों को पकड़कर सुरक्षित स्थान पर भेजने की मांग की है ताकि ग्रामीणों को राहत मिल सके। इधर जिले के बंगुरसिया और आसपास के क्षेत्रों में हाथियों का आतंक भी लगातार बढ़ रहा है। बताया जा रहा है कि दो दर्जन से अधिक हाथियों का झुंड पिछले कुछ समय से इस क्षेत्र में सक्रिय है। इसी झुंड से अलग हुए दो हाथी लगातार गांवों और सड़कों के आसपास घूम रहे हैं, जिससे लोगों में दहशत फैल गई है। हाथियों की मौजूदगी के कारण ग्रामीणों को रात के समय विशेष सतर्कता बरतनी पड़ रही है। देर रात हाथियों के सड़क पर आ जाने से रायगढ़ सुंदरगढ़तमनार मार्ग पर यातायात पूरी तरह प्रभावित हो गया। हाथियों ने लंबे समय तक सड़क पर डेरा जमाए रखा, जिसके कारण दोनों ओर वाहनों की लंबी कतार लग गई। कई वाहन चालक घंटों तक सड़क खुलने का इंतजार करते रहे।

धमतरी पुलिस ने विद्यार्थियों और शिक्षकों को जिम्मेदार नागरिक बनने किया प्रेरित

धमतरी। पुलिस अधीक्षक भावना पांडेय के निर्देशन में पुलिस द्वारा विद्यार्थियों एवं आमजन को यातायात नियमों, साइबर अपराधों से बचाव तथा कानून संबंधी जानकारी देने के उद्देश्य से लगातार जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है। इसी क्रम में शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, संबलपुर (धमतरी) में धमतरी पुलिस यातायात द्वारा जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के दौरान विद्यार्थियों को यातायात नियमों के पालन, सड़क सुरक्षा, नशे के दुष्प्रभाव एवं नए आपराधिक कानूनों की महत्वपूर्ण जानकारियां देकर जागरूक किया गया। साथ ही सुरक्षित यातायात व्यवस्था एवं जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए आवश्यक सावधानियों के प्रति भी विद्यार्थियों को प्रेरित किया गया। में कैद हुए संदिग्ध पुलिस टीम द्वारा विद्यार्थियों को हेलमेट एवं सीट बेल्ट के अनिवार्य उपयोग, नाबालिगों द्वारा वाहन नहीं चलाने, वाहन चलाते समय मोबाइल का उपयोग नहीं करने, निर्धारित गति सीमा का पालन करने एवं सड़क पर अनुशासित व्यवहार सहित विभिन्न यातायात नियमों की जानकारी दी गई। विद्यार्थियों को साइबर ठगी से बचाव, डळढ, पासवर्ड एवं बैंक संबंधी गोपनीय जानकारी साझा नहीं करने, संदिग्ध लिंक से सावधान रहने तथा साइबर अपराध की स्थिति में तत्काल पुलिस को सूचना देने के संबंध में जागरूक किया गया। साथ ही देश में लागू नए आपराधिक कानूनों के संबंध में भी विद्यार्थियों एवं शिक्षकों को महत्वपूर्ण जानकारी देते हुए कानून के प्रति जागरूक एवं जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए प्रेरित किया गया। कार्यक्रम में प्रधानमंत्री राहवीर योजना के संबंध में भी जानकारी दी गई। सड़क

दुर्घटना में घायल व्यक्ति की तत्काल मदद कर उसे अस्पताल पहुंचाने वाले नागरिकों के लिए शासन द्वारा दिए जाने वाले प्रोत्साहन एवं प्रशस्ति-पत्र के संबंध में जानकारी देते हुए विद्यार्थियों को मानवता एवं संवेदनशीलता के साथ दुर्घटना पीड़ितों की मदद करने के लिए प्रेरित किया गया।शिक्षण और कक्षा संसाधन विद्यालय में लगभग 220 विद्यार्थियों ने कार्यक्रम में सहभागिता कर यातायात, साइबर सुरक्षा, नए कानूनों एवं पीएम राहवीर योजना से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारियां प्राप्त कीं।

छात्राओं और महिलाओं को दिया गया महिला सशक्तिकरण का संदेश

महासमुंद। देशभर में मिशन माउंट एवरेस्ट एवं रूरल गर्ल्स एम्पावरमेंट एंड सोलो साइकिलिंग कैंपेन अक्रॉस इंडिया के तहत सोलो साइकिल यात्रा कर रही भारतीय पर्वतारोही एवं प्रेरक वक्ता समीरा खान इन दिनों छत्तीसगढ़ प्रवास पर हैं। ओडिशा के बरगढ़ से अपनी साइकिल यात्रा प्रारंभ कर सरायपाली होते हुए वे मंगलवार रात लगभग 10 बजे महासमुंद पहुंचीं। महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा उनके ठहरने की व्यवस्था नया सर्किट हाउस में की गई तथा आवश्यक सहयोग उपलब्ध कराया गया। में कैद हुए संदिग्ध बुधवार को समीरा खान ने महर्षि विद्या मंदिर मचेवा, आशीबाई गोलछा उमा कन्या शाला, पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय, गुड शेफर्ड हायर सेकेंडरी स्कूल तथा स्वामी आत्मानंद उत्कृष्ट माध्यमिक विद्यालय सहित विभिन्न शिक्षण संस्थानों का भ्रमण कर छात्राओं एवं महिलाओं से संवाद किया। उन्होंने बताया कि वे आंध्र प्रदेश के अनंतपुर जिले की निवासी हैं। बचपन में माता-पिता को खो देने जैसी कठिन परिस्थितियों के बावजूद उन्होंने हार नहीं मानी

और अपने साहस, आत्मविश्वास तथा दृढ़ संकल्प के बल पर पर्वतारोहण और सोलो साइकिलिंग के क्षेत्र में विशिष्ट पहचान बनाई। उन्होंने नेपाल की विश्व प्रसिद्ध एवं चुनौतीपूर्ण अमा डबलम पर्वत चोटी पर सफलतापूर्वक आरोहण किया है तथा भविष्य में विश्व की सबसे ऊंची चोटी माउंट एवरेस्ट फतह करने का लक्ष्य रखा है। समीरा खान ने बताया कि सोलो साइकिलिंग उनके जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा है। अब तक वे लगभग 9 हजार किलोमीटर की साइकिल यात्रा कर चुकी हैं तथा 37 देशों के साथ भारत के अनेक राज्यों का भ्रमण कर चुकी हैं। उन्होंने कहा कि उनकी अधिकांश यात्राएं स्व-वित्तपोषित हैं और वे उद्यमी के रूप में कार्य कर अपने अभियानों का खर्च स्वयं वहन करती हैं। उन्होंने छात्राओं से कहा कि प्रत्येक लड़की को बड़े सपने देखने और उन्हें पूरा करने का पूरा अधिकार है। आत्मविश्वास, शिक्षा, मेहनत और दृढ़ इच्छाशक्ति के बल पर कोई भी लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है। उन्होंने महिलाओं और बालिकाओं को आत्मनिर्भर बनने, शिक्षा को प्राथमिकता देने तथा जीवन की चुनौतियों का साहसपूर्वक सामना करने का संदेश दिया। उन्होंने कहा कि समाज में सकारात्मक परिवर्तन तभी संभव है, जब प्रत्येक बेटी को समान अवसर, सम्मान और आगे बढ़ने का अनुकूल वातावरण मिले। जिले में उनके विभिन्न विद्यालयों के भ्रमण के दौरान छात्राओं ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की तथा उनके अनुभवों से प्रेरणा प्राप्त की।

सेवा सेतु से बेटे का निवास प्रमाण पत्र घर के पास ही हुआ तैयार

रायपुर। शासन की डिजिटल पहल सेवा सेतु आम नागरिकों के लिए शासकीय सेवाओं को पहले से अधिक सरल, पारदर्शी और सुलभ बना रही है। इसी सुविधा का लाभ उठाते हुए कोण्डागांव के बंधापारा निवासी रेखलाल साहू ने अपने पुत्र मयंक साहू का निवास प्रमाण पत्र बिना अनावश्यक भागदौड़ के सहजता से बनवा लिया। रेखलाल साहू ने बताया कि उनके बेटे मयंक के विद्यालय में प्रवेश एवं अन्य शासकीय कार्यों के लिए निवास प्रमाण पत्र की आवश्यकता थी। पहले ऐसे दस्तावेज बनवाने के लिए कार्यालयों के कई चक्कर लगाने पड़ते थे, जिससे समय और श्रम दोनों अधिक लगते थे। इसी दौरान रेखलाल साहू को सेवा सेतु पोर्टल की जानकारी मिली। उन्होंने निकट स्थित सेवा केंद्र में जाकर आवश्यक दस्तावेजों के साथ ऑनलाइन आवेदन किया। ऑनलाइन आवेदन की पूरी प्रक्रिया सरल और पारदर्शी रही। दस्तावेजों के सत्यापन के बाद निर्धारित समय-सीमा में मयंक का निवास प्रमाण पत्र जारी कर दिया गया। प्रमाण पत्र मिलने के बाद विद्यालय में आवश्यक औपचारिकताएं समय पर पूरी हो सकीं और अन्य शासकीय कार्यों में भी सुविधा मिली।

देह व्यापार के दो अड्डों पर पुलिस की छापेमारी, दो महिलाओं समेत चार गिरफ्तार

रायगढ़। छत्तीसगढ़ के रायगढ़ जिले में महिलाओं और बच्चों के शोषण के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान के तहत पुलिस ने बड़ी कार्रवाई करते हुए शहर में संचालित देह व्यापार के दो अड्डों का एक साथ भंडाफोड़ किया है। संयुक्त पुलिस टीम ने लालटंकी दानीपारा और मिट्ठूमुड़ा दुर्गा चौक क्षेत्र में एक साथ छापेमारी कर दो महिलाओं समेत चार आरोपियों को गिरफ्तार किया। कार्रवाई के दौरान दो नाबालिग बालिकाओं को सुरक्षित मुक्त कराकर संरक्षण में लिया गया। पुलिस ने दोनों मामलों में अनैतिक देह व्यापार (निवारण) कैद हुए संदिग्ध अधिनियम, 1956 तथा पॉक्सो अधिनियम के तहत मामला दर्ज कर आरोपियों को न्यायिक रिमांड पर भेज दिया है। इस कार्रवाई को जिले में अनैतिक गतिविधियों और मानव शोषण के खिलाफ बड़ी सफलता माना जा रहा है। यह पूरी कार्रवाई वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक शशि मोहन सिंह के निर्देशन, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक अनिल सोनी के मार्गदर्शन तथा

नगर पुलिस अधीक्षक एवं साइबर डीएसपी उन्नति ठाकुर के नेतृत्व में की गई। अभियान में थाना साइबर, कोतवाली और जूटमिल पुलिस की संयुक्त टीम शामिल रही। पुलिस को दोनों स्थानों पर देह व्यापार संचालित होने की गोपनीय सूचना मिली थी, जिसके बाद योजनाबद्ध तरीके से कार्रवाई को अंजाम दिया गया। लालटंकी दानीपारा में पहला छापा पहली कार्रवाई थाना कोतवाली क्षेत्र के लालटंकी दानीपारा में की गई। पुलिस को सूचना मिली थी कि लक्ष्मी शर्मा अपने मकान में लड़कियों को बुलाकर देह व्यापार का संचालन कर रही है। सूचना की पुष्टि के लिए पुलिस ने पहले एक पाइंटर ग्राहक को 1,500 रुपये देकर मकान भेजा। पूर्व निर्धारित संकेत मिलते ही संयुक्त पुलिस टीम ने मौके पर दबिश दी। छापेमारी के दौरान मकान से संचालिका लक्ष्मी शर्मा (46 वर्ष) को गिरफ्तार किया गया। पुलिस ने उसके कब्जे से पाइंटर को दिए गए 500-500 रुपये के तीन नोट, कुल 1,500 रुपये तथा एक सैमसंग मोबाइल फोन बरामद किया। तलाशी के दौरान मकान के अलग-अलग कमरों से दो नाबालिग बालिकाएं मिलीं। इनमें से एक कमरे में ऋषभ शर्मा (24 वर्ष) भी मौजूद था। मौके से आपत्तिजनक सामग्री भी बरामद की गई। पूछताछ में लक्ष्मी शर्मा ने स्वीकार किया कि वह पिछले एक-दो वर्षों से अपने मकान में लड़कियों को बुलाकर देह व्यापार करा रही थी। ग्राहकों से मिलने वाली रकम में से वह लड़कियों को भुगतान करती थी और शेष राशि स्वयं रखती थी। जांच में यह भी सामने आया कि आरोपी आर्थिक लाभ के उद्देश्य से संगठित तरीके से यह अवैध गतिविधि संचालित कर रहे थे। इसके आधार पर पुलिस ने लक्ष्मी शर्मा और ऋषभ शर्मा के खिलाफ अनैतिक देह व्यापार (निवारण) अधिनियम की धारा 3, 4 एवं 5 तथा पॉक्सो अधिनियम की धारा 14 के तहत मामला दर्ज किया। मिट्ठूमुड़ा दुर्गा चौक में दूसरी कार्रवाई इसी दौरान थाना साइबर और थाना जूटमिल की संयुक्त टीम ने मिट्ठूमुड़ा दुर्गा चौक स्थित एक अन्य मकान में भी छापेमारी की। यहां भी पुलिस ने पहले पाइंटर ग्राहक भेजकर सूचना का सत्यापन किया और संकेत मिलते ही टीम ने मकान में दबिश दी। मौके पर मकान संचालिका सुनीता मेहर (48 वर्ष) मिली।

जशपुर को बेहतर सड़क संपर्क से शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि और व्यापार क्षेत्र में मिलेगा नया संबल

जशपुर। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के नेतृत्व में ग्रामीण अधोसंरचना को सुदृढ़ बनाने की दिशा में जशपुर जिले को एक और महत्वपूर्ण सौगात मिली है। राज्य शासन ने वर्ष 2025-26 के बजट प्रावधान के अंतर्गत जिले के चार प्रमुख ग्रामीण संपर्क मार्गों के निर्माण के लिए कुल 8 करोड़ 44 लाख 68 हजार रुपये की प्रशासकीय स्वीकृति प्रदान की है। इन सड़कों के निर्माण से दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्रों की कनेक्टिविटी मजबूत होगी तथा आवागमन के साथ-साथ शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि एवं व्यापारिक गतिविधियों को भी नई गति मिलेगी। शासन के इस निर्णय से क्षेत्रवासियों में उत्साह और खुशी का माहौल है। स्वीकृति के अनुसार बुलडेगा से रेचवाघाट पहुंच मार्ग (1.20 किलोमीटर) के

निर्माण के लिए 1 करोड़ 23 लाख 77 हजार रुपये स्वीकृत किए गए हैं। इस सड़क के निर्माण से ग्रामीणों को वर्षभर सुरक्षित और सुगम आवागमन की सुविधा मिलेगी तथा दैनिक आवागमन में आने वाली परेशानियां दूर होंगी। इसी प्रकार खुंटापानी से सलियामुड़ा पहुंच मार्ग (3 किलोमीटर) के निर्माण के लिए 3 करोड़ 46 लाख 67 हजार रुपये की प्रशासकीय स्वीकृति प्रदान की गई है। यह मार्ग कई गांवों के लिए महत्वपूर्ण संपर्क मार्ग है। सड़क बनने से विद्यार्थियों को विद्यालय, मरीजों को स्वास्थ्य संस्थानों तथा किसानों को कृषि उपज के परिवहन में बेहतर सुविधा मिलेगी। कोसमभावना से बनगांव पहुंच मार्ग (1.20 किलोमीटर) के निर्माण, जिसमें पुल-पुलिया का निर्माण भी शामिल है, के लिए 1 करोड़ 43 लाख 84 हजार रुपये की स्वीकृति दी गई है। इस परियोजना से विशेषकर बरसात के दौरान आवागमन बाधित होने की समस्या का स्थायी समाधान होगा और ग्रामीणों को पूरे वर्ष सुरक्षित आवागमन का लाभ मिलेगा। इसके अतिरिक्त बुलडेगा मेन रोड से सुकबासुपारा होते हुए भिंजपुर पहुंच मार्ग (2.50 किलोमीटर) के निर्माण के लिए 2 करोड़ 30 लाख 40 हजार रुपये की प्रशासकीय स्वीकृति प्रदान की गई है। इस सड़क के निर्माण से क्षेत्र के अनेक गांवों की कनेक्टिविटी मजबूत होगी और ग्रामीणों को बेहतर परिवहन सुविधा उपलब्ध होगी। इन सभी परियोजनाओं के पूर्ण होने के बाद संबंधित क्षेत्रों में सड़क संपर्क व्यवस्था और अधिक सुदृढ़ होगी। किसानों को अपनी उपज बाजार तक पहुंचाने में आसानी होगी, विद्यार्थियों और मरीजों का आवागमन सुगम होगा तथा स्थानीय व्यापार और सामाजिक-आर्थिक गतिविधियों को भी प्रोत्साहन मिलेगा। स्थानीय जनप्रतिनिधियों एवं ग्रामीणों ने मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि राज्य सरकार ग्रामीण विकास को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए लगातार जनहितकारी निर्णय ले रही है।

महासमुंद में मानसून मेहरबान: जिले में अब तक 724.7 मिमी औसत वर्षा 130.94

महासमुंद। जिले में इस वर्ष मानसून लगातार सक्रिय बना हुआ है और इसका असर जिलेभर में दर्ज की जा रही अच्छी वर्षा के रूप में दिखाई दे रहा है। 01 जून 2026 से शुरू हुए मानसून सीजन के दौरान अब तक महासमुंद जिले में 724.7 मिलीमीटर औसत वर्षा दर्ज की गई है। लगातार हो रही बारिश से किसानों के चेहरों पर खुशी है, वहीं जलाशयों, तालाबों और नदियों में भी जलस्तर बढ़ने लगा है। अच्छी वर्षा के कारण खरीफ फसलों की बुआई और फसल विकास को भी पर्याप्त लाभ मिल रहा है। प्रशासन लगातार वर्षा की स्थिति पर नजर बनाए हुए है और संबंधित विभागों को आवश्यक सतर्कता बरतने के निर्देश दिए गए हैं ताकि किसी भी प्रकार की आपात स्थिति से समय रहते निपटा जा सके। हुए संदिग्ध भू-अभिलेख विभाग से प्राप्त जानकारी के अनुसार जिले की सभी तहसीलों में अलग-अलग

मात्रा में वर्षा दर्ज की गई है। इस बार सबसे अधिक औसत वर्षा पिथौरा तहसील में 917.3 मिलीमीटर रिकॉर्ड की गई है, जिससे यह जिले की सबसे अधिक वर्षा वाली तहसील बन गई है। इसके बाद सरायपाली में 914.4 मिलीमीटर वर्षा दर्ज की गई, जो पिथौरा से बहुत कम अंतर पर रही। वहीं बसना तहसील में अब तक 777.6 मिलीमीटर वर्षा दर्ज हुई है। दूसरी ओर बागबाहरा में 591.9 मिलीमीटर, कोमाखान में 576.3 मिलीमीटर तथा महासमुंद तहसील में 571.1 मिलीमीटर वर्षा दर्ज की गई, जो जिले में सबसे कम रही। हालांकि सभी क्षेत्रों में मानसूनी गतिविधियां लगातार बनी हुई हैं और आने वाले दिनों में वर्षा के आंकड़ों में और वृद्धि होने की संभावना है। 31 जुलाई 2026 को भी जिले में हल्की से मध्यम बारिश का दौर जारी रहा। इस दिन पूरे जिले में 4.1 मिलीमीटर औसत वर्षा दर्ज की गई। तहसीलवार आंकड़ों पर नजर डालें तो महासमुंद तहसील में सबसे अधिक 5.9 मिलीमीटर वर्षा रिकॉर्ड की गई। इसके बाद सरायपाली में 4.9 मिलीमीटर, बागबाहरा में 4.1 मिलीमीटर, बसना में 4.0 मिलीमीटर, पिथौरा में 3.7 मिलीमीटर तथा कोमाखान में 2.2 मिलीमीटर वर्षा दर्ज की गई।

'भाई तेरा स्टार है':कहानी में दम नहीं, कॉमेडी में हंसी नहीं, राघव जुयाल की पहली सोलो लीड ने किया सिरदर्द

कॉमेडी फिल्म की सबसे बड़ी जिम्मेदारी होती है दर्शकों को हंसाना। फिल्म 'भाई तेरा स्टार है' इसी सबसे जरूरी काम में बुरी तरह नाकाम रहती है। फिल्म शुरूआत से आखिर तक यह भरोसा दिलाती रहती है कि अब कुछ मजेदार होने वाला है, लेकिन हर अगले सीन के साथ निराशा ही हाथ लगती है। शोर है, भागदौड़ है, गलतफहमियां हैं, लेकिन हंसी कहीं दिखाई नहीं देती। राघव जुयाल की पहली सोलो लीड फिल्म से जिस धमाके की उम्मीद थी, वह शुरूआत में ही हवा हो जाती है। फिल्म की कहानी कहानी लंदन में रहने वाले स्ट्रगलिंग एक्टर अजय सिंह (राघव जुयाल) की है। क्रिकेट की एक शर्त हारने के बाद उस पर क्लब मालिक फैटी (संजय कपूर) का दस हजार पाउंड का कर्ज चढ़ जाता है। पैसे लौटाने के लिए उसके पास सिर्फ एक रात है, लेकिन सच बोलने की बजाय अजय एक के बाद एक झूठ बोलता चला जाता है। उसकी गर्लफ्रेंड रोशनी (निहारिका एन एम), बहन नताशा (पार्वती ओमनाकुट्टन) और रोशनी का भाई सिड (विवान भटेना) भी इस झूठ के जाल में फंसते चले जाते हैं।

कहानी का आइडिया सुनने में दिलचस्प लगता है। एक रात, ढेर सारी गलतफहमियां और भागदौड़ वाली कॉमेडी, लेकिन स्क्रीन पर सब कुछ इतना बिखरा हुआ है कि कुछ देर बाद यह समझना मुश्किल हो जाता है कि कहानी आखिर जाना कहां चाहती है। कई सीन सिर्फ समय भरने के लिए जोड़े गए लगते हैं और क्लाइमैक्स तक पहुंचते पहुंचते फिल्म पूरी तरह थका देती है।

फिल्म में एक्टिंग राघव जुयाल ने किल जैसी फिल्मों में अपने अभिनय से प्रभावित किया था, लेकिन यहां वह पूरी तरह लड़खड़ा जाते हैं। यह उनकी पहली सोलो लीड फिल्म है, लेकिन पूरी फिल्म में वह लीड हीरो से ज्यादा किसी साइड किरदार जैसे महसूस होते हैं।

उनके चेहरे के हावभाव जरूरत से ज्यादा बनावटी लगते हैं और कई जगह ओवरएक्टिंग कॉमेडी को पूरी तरह खत्म कर देती है। कॉमिक टाइमिंग भी बार बार चूकती है, जिससे उनका किरदार दर्शकों से जुड़ ही नहीं पाता।

संजय कपूर अपने अनुभव से कुछ दृश्यों को संभालने की कोशिश करते हैं, लेकिन कमजोर स्क्रिप्ट उनके हाथ भी बांध देती है। विवान भटेना अपने सीमित स्क्रीन टाइम में असर छोड़ते हैं और कई जगह राघव से ज्यादा सहज नजर आते हैं। पार्वती ओमनाकुट्टन ने फिल्म में सबसे बैलेंस्ड परफॉर्मेंस दी है। निहारिका एन एम ईमानदार कोशिश करती हैं, लेकिन कमजोर राइटिंग उन्हें भी ज्यादा मौका नहीं देता।

भूख से बचने के लिए दोपहर तक सोता था

भोपाल से मुंबई तक अन्नू कपूर का सफर संघर्षों से भरा रहा। आर्थिक तंगी के कारण उन्हें पढ़ाई छोड़नी पड़ी। परिवार चलाने के लिए उन्होंने चाय बेची, चाट का ठेला लगाया, लॉटरी टिकट बेचे और ऑटो रिक्शा चलाया। गरीबी ने उनका आईएएस बनने का सपना छीन लिया, लेकिन अभिनय ने नई पहचान दिलाई।

जेब में सिर्फ 419 रुपए 25 पैसे लेकर मुंबई पहुंचे अन्नू कपूर को चेहरे की वजह से रिजेक्ट किया गया, लेकिन अपनी प्रतिभा के दम पर उन्होंने राष्ट्रीय पुरस्कार जीतकर साबित किया कि असली हीरो चेहरा नहीं, हुनर होता है। 20 फरवरी 1956 को भोपाल के एक साधारण परिवार में जन्मे अन्नू कपूर का बचपन आर्थिक परेशानियों में बीता। उनके पिता मदनलाल कपूर पारसी थिएटर चलाते थे, जबकि मां कमल शबनम क्लासिकल गायिका और शिक्षिका थीं। घर में कला का माहौल था, लेकिन आर्थिक स्थिति इतनी कमजोर थी कि दो वक्त की रोटी जुटाना भी मुश्किल हो जाता था।अन्नू कपूर पढ़ाई में अच्छे थे और उनका सपना आईएएस अधिकारी बनने का था,

तारक मेहता: 'कोई चमत्कार हो जाए और दिशा शो में वापस आ जाएं', जेठालाल ने दया को मिस करते हुए कही दिल की बात

टीवी शो 'तारक मेहता का उल्टा चश्मा' में दया बेन यानी दिशा वकानी के साथ जेठालाल की जोड़ी लोगों को काफी पसंद आई और दिलीप जोशी भी उनके साथ अपनी केमिस्ट्री बहुत मिस कर रहे हैं। एक्टर ने उम्मीद जताते हुए कहा कि कोई चमत्कार हो जाए और दिशा शो में वापस आ जाएं।

दिलीप जोशी तारक मेहता का उल्टा चश्मा

दिलीप जोशी ने टीवी शो 'तारक मेहता का उल्टा चश्मा' में अपनी को-स्टार दिशा वकानी के साथ दर्शकों के दिलों में खास पहचान बनाई है। हालांकि दिशा अब शो छोड़ चुकी हैं, जिसकी कमी दर्शकों को ही नहीं, बल्कि को-स्टार्स को भी भरपूर खलती है।

दिलीप जोशी ने मीडिया के साथ बातचीत में माना कि दिशा वकानी जिन्होंने 'तारक मेहता का उल्टा चश्मा' में दया बेन का किरदार निभाया था उनके साथ स्क्रीन शेयर करना वो मिस करता हैं। दरअसल, शो के 18 साल पूरे होने के अवसर पर एक्टर ने मीडिया के साथ बातचीत में उम्मीद जताते हुए कहा कि 'कोई चमत्कार हो जाए और दिशा शो में वापस आ जाएं।'

'पिछले 10 साल से दिशा और मैं इस शो के जरिए जुड़े थे'

दिलीप ने कहा, 'जाहिर है कि पिछले 10 साल से दिशा और मैं इस शो के जरिए जुड़े थे। लोग जानते हैं कि हमने साथ में कितने शानदार सीन किए हैं। इसलिए हमें निश्चित रूप से उस केमिस्ट्री और सीन्स की याद आती रहती है।' कोई चमत्कार हो जाए और दिशा शो में वापस आ जाएं। जाहिर है कि पिछले 10 साल से दिशा और मैं इस शो के जरिए जुड़े थे। लोग जानते हैं कि हमने साथ में कितने शानदार सीन किए हैं। इसलिए हमें निश्चित रूप से उस केमिस्ट्री और सीन्स की याद आती रहती है।

'उनके पास आइडिया हैं, लेकिन स्क्रिप्ट में ऐसा हो नहीं पा रहा है'

एक्टर ने यह भी बताया कि निमार्ता असित मोदी जेठालाल और दयाबेन के जादू को फिर से लाने की कोशिश कर रहे हैं।

महावतार के लिए विक्की कौशल करेंगे जबरदस्त बॉडी ट्रांसफॉर्मेशन, बढ़ाएंगे 25 किलो वजन

नई दिल्ली/टीम डिजिटल। बॉलीवुड अभिनेता विक्की कौशल अपने हर किरदार के लिए पूरी मेहनत और समर्पण के साथ तैयारी करने के लिए जाने जाते हैं। अब वह अपनी आगामी फिल्म 'महावतार' में भगवान परशुराम का किरदार निभाने के लिए एक बड़े शारीरिक बदलाव से गुजरने वाले हैं। रिपोर्ट्स के मुताबिक, इस भूमिका के लिए अभिनेता को 25 किलो से अधिक वजन बढ़ाना होगा, जिसकी तैयारी जल्द शुरू होने जा रही है।

'लव एंड वॉर' के बाद शुरू होगी नई चुनौती

विक्की कौशल इन दिनों संजय लीला भंसाली की फिल्म 'लव एंड वॉर' का काम लगभग पूरा कर चुके हैं, जिसमें उनके साथ रणबीर कपूर और आलिया भट्ट भी नजर आएंगे। इसके बाद उनका पूरा ध्यान फिल्म 'महावतार' की तैयारियों पर रहेगा। हालांकि यह फिल्म पहले इसी साल रिलीज होने वाली थी, लेकिन शूटिंग में देरी के कारण इसकी योजना आगे बढ़ गई। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, निर्देशक अमर कौशिक ने इस फिल्म के लिए एक बार फिर फिटनेस कोच तेजस लालवानी को विक्की कौशल की ट्रेनिंग की जिम्मेदारी सौंपी है। इससे पहले दोनों ने फिल्म 'छावा' में भी साथ काम किया था। बताया जा रहा है कि दिसंबर में शूटिंग शुरू होने से पहले अभिनेता को योद्धा जैसी मजबूत और विशाल काया तैयार करनी होगी।

सितंबर से शुरू होगा फिटनेस मिशन

रिपोर्ट्स के मुताबिक, विक्की कौशल सितंबर से अपनी स्पेशल ट्रेनिंग शुरू करेंगे। उनके पास लगभग तीन महीने का समय होगा, जिसमें वह अपने शरीर को किरदार के अनुरूप ढालेंगे। इससे पहले फिल्म 'छावा' के लिए भी उन्होंने करीब 25 किलो वजन बढ़ाया था और 80 किलो से 105 किलो तक पहुंचे थे। इस बार उन्हें उससे भी अधिक प्रभावशाली शारीरिक बनावट हासिल करनी होगी। बताया जा रहा है कि फिल्म में भगवान परशुराम के स्वरूप को प्राचीन ग्रंथों के वर्णन के अनुसार प्रस्तुत किया जाएगा। इसी वजह से विक्की कौशल को चौड़ी छाती, मजबूत कंधे, भारी शरीर और असाधारण शारीरिक ताकत विकसित करनी होगी,

जब मन्ना डे ने कहा, हजारों मुझ जैसे आएंगे पर एक और रफी नहीं होगा

बर्फीली पहाड़ियों पर दिल खोल कर खुल्लम-खुल्ला प्यार का इजहार करते शम्मी कपूर को जब 'याहू... चाहे कोई कोई मुझे जंगली कहे...' गाने के लिए आवाज चाहिए थी, तो वह अल्हड़ बाँकपन रफी की आवाज में मिला.जब इश्क के रूहानी रूप की बात आती है तो रफी एक कव्वाली को आवाज देते हैं- ये इश्क इश्क है, इश्क इश्क... इश्क आजाद है, इश्क आजाद है, हिंदू न मुसलमान है इश्क.ये वही रफी हैं जिनका गाया 'मन तपड़त हरि दर्शन को आज...' आज भी भक्ति रस के लिए याद किया जाता है. यही नहीं, पर्दे पर गुरु दत्त जब भारत की हकीकत और हुकूमत दोनों से बेजार हो जाते हैं, तो ये रफी ही हैं जो गाते हैं, 'जिन्हें नाज है हिंद पर, वो कहाँ हैं...'ये सब मशहूर गायक मोहम्मद रफी की गायकी के महज चंद रंग हैं.

एक वक़्त था जब फि ल्मों के हिट गाने का मतलब मोहम्मद रफी होता था. उनके न रहने के सालों बाद भी लोग उनकी आवाज और दिल जीत लेने वाले अंदाज के कि स्से सुनाते नहीं थकते.इसकी एक मिसाल शम्मी कपूर के कि स्सों में मिलती है. कहा जाता है, जैसे मुकेश राज कपूर की आवाज थे, वैसे ही मोहम्मद रफी शम्मी कपूर की आवाज थे.

सुजाता देव की किताब 'मोहम्मद रफी- ए गोल्डन वॉयस' में शम्मी कपूर याद करते हैं, ₹हम लोगों को 'तारीफ करूँ क्या उसकी...' गाना रिकॉर्ड करना था. रात भर मैं सो नहीं पाया. मैं चाहता था कि ये जुमला बार-बार दोहराया जाए और फिर गाने का अंत हो. लेकिन संगीतकार ओपी नैय्यर को मेरी सलाह पसंद नहीं आई.₹

मेरी निराशा देखकर रफी ओपी नैय्यर से बोले- पापा जी, आप कंपोजर हो. मैं गायक हूँ पर पर्दे पर तो शम्मी कपूर को ही एक्टिंग करनी है. उन्हें करने दो. अगर अच्छा नहीं लगेगा तो हम दोबारा कर लेंगे. रफी साहब ने वैसे ही गाया, जैसा मैंने सोचा थाशम्मी कपूर बताते हैं, जब ओपी नैय्यर ने गाना देखा तो मुझे बाँहों में भर लिया और दुआएँ दीं. रफी साहब ने अपनी शरारती पर नरम आवाज में कहा-अब बात बनी न? रफी साहब चुटकी में दिल जीत लेते थे. मैं मोहम्मद रफी के बगैर अधूरा हूँ. इसमें तब के पत्रकार राजीव शुक्ला के सवाल पर उन्होंने कहा था, ₹रफी साहब नंबर वन थे. मुझसे बेहतर. मैं अपनी तुलना सिर्फ.रफी से करता हूँ. जैसा वह गाते थे, शायद ही कोई गा पाता. अगर रफी नहीं होते तब ही मैं उनकी जगह ले सकता था. हम दो ऐसे गायक थे, जो हर तरह के गाने गा सकते थे

मोहम्मद रफी ने उस दौर में गाने गाए जब बतौर गायक मुकेश और किशोर कुमार भी फि ल्मों में छाए हुए थे. हालाँकि, इन सबके आपसी रिश्ते नायाब थे.

मुकेश के बेटे नितिन मुकेश ने बीबीसी हिंदी से बातचीत में बताया, इन सबका रिश्ता बहुत सुंदर था. मुझे ताज्जुब होता था जब फोन उठाकर मुकेश जी रफी साब को कहते, 'रफी मियाँ, तुमने ये गीत इतना खूबसूरत गाया है. काश, मैं तुम्हारी तरह गा सकता.' कभी रफी साब का फोन आता कि मुकेश तुमने कितना सुंदर गाया है.

जब रफी ने कहा, मेरे गले में मिठास भर दो

इतना मकबूल होने के बावजूद रियाज और खुद को बेहतर करने की मोहम्मद रफी की ललक कैसी थी, इसका किस्सा संगीतकार खय्याम अलग-अलग जगहों पर कई बार बता चुके हैं.खय्याम ने बताया था, ₹रफी बार-बार मुझे दावत पर बुलाते. मुझे लगा कि क्या माजरा है. फिर रफी साब की ओर से मेरे लिए गुजारिश आई झ आप मेरी आवाज में मिठास भर दीजिए. ये तब की बात है जब रफी अपनी लोकप्रियता के उरूज पर थे. मुझे यकीन नहीं हुआ. दरअसल, उन दिनों रफी हाई पिच वाले गाने गाया करते थे.खय्याम कहते हैं, ₹मैंने उनके सामने कुछ शर्तें रखीं. जैसे, ये भूल जाएँ कि वे महान गायक हैं. रिहर्सल के दौरान उनके आसपास कोई नहीं होगा.

मुमताज 79, अमिताभ के लिए छोड़ी मर्सिडीज:शम्मी कपूर का प्रपोजल ठुकराया, जीतेंद्र और शशि कपूर बी ग्रेड हीरोइन मानते थे

70-80 के दशक की मशहूर एक्ट्रेस मुमताज आज 79 साल की हो चुकी हैं। उस दौर में मुमताज की वो पॉपुलैरिटी थी कि उनके फिल्मों में पहने गए कपड़े ट्रेंड बन जाते थे। खूबसूरती ऐसी थी कि यश चोपड़ा, शम्मी कपूर जैसे लोग भी उन्हें शादी का प्रस्ताव देने से कतराते नहीं थे, लेकिन काम और करियर के लिए जुनूनी मुमताज हर प्रस्ताव ठुकरा देती थीं। हालांकि एक समय ऐसा भी था जब कुछ बी-ग्रेड फिल्मों में काम करने की वजह से शशि कपूर, जीतेंद्र जैसे बड़े एक्टर्स ने उनके साथ फिल्में करने से इनकार कर दिया था। आज मुमताज के बर्थडे के खास मौके पर पढ़िए, उनके करियर और जिंदगी से जुड़े कुछ अनसुने किस्से- 31 जुलाई 1947 में मुमताज का जन्म हैदराबाद के ड्रायफ्रूट वेंडर अब्दुल समाज अख्सरी के घर हुआ। परिवार ईरान से ताल्लुक रखता था। पिता इमामों के खानदान से थे। मुमताज महज एक साल की थीं, जब माता-पिता अलग हो गए। मां ने ही फिल्मों में बतौर जूनियर आर्टिस्ट काम कर मुमताज और बड़ी बहन मलका की अकेले परवरिश की। कुछ समय बाद मां बॉम्बे आकर बसीं। मुमताज भी अक्सर उनके साथ सेट पर जातीं। सेट पर हंसती खेलतीं मुमताज को महज 5 साल की उम्र में बतौर बाल कलाकार फिल्म संसार में काम करने मिला। आगे वो चाइल्ड आर्टिस्ट के तौर पर यास्मीन (1955), सोने की चिड़िया (1958), लाजवंती (1958), तलाक (1958) जैसी कई फिल्मों में नजर आईं।

मुमताज के बचपन की तस्वीर।

फिल्मों में काम मिलने से घर की आर्थिक स्थिति सुधरी और मुमताज मां के साथ वाल्केश्वर स्थित बिल्डिंग में आकर रहने लगीं। उनके ठीक ऊपर लता मंगेशकर का घर था, जहां 16टट पर फिल्में दिखाई जाती थीं। एक ही इंडस्ट्री से होने के चलते लता नन्हीं मुमताज को काफी लाड़ देती थीं। जब भी घर में फिल्म शुरू करतीं तो मुमताज को भी घर बुला लेतीं। लता उन्हें गोद में बैठाकर फिल्म दिखातीं और वो जल्द ही सो जाती थीं। लेकिन जाते हुए हर बार कहतीं- आंटी जब भी फिल्म देखो, मुझे भी बुला लेना। कई बार तो लता मंगेशकर के भाई उन्हें सोती हुई हालत में घर छोड़ने जाते थे।

किस्सा-2

सेट पर मिली मां की मौत की खबर, डायरेक्टर से पूछा- क्या मैं जा सकती हूं दिन भर फिल्मों के सेट पर बिताते हुए जल्द ही उन्होंने परिवार की जिम्मेदारी उठानी शुरू कर दी। 12 की उम्र में उन्हें जमीन के तारे (1960) में कैरेक्टर रोल मिल गया। इस फिल्म में उनकी परफॉर्मेंस देखने के बाद मशहूर डायरेक्टर वी.शांताराम ने उन्हें फिल्म स्त्री में अच्छा रोल दिया। एक दिन मुमताज फिल्म स्त्री के सेट पर पहुंचीं। मुमताज डांस का शॉट दे ही रही थीं कि घर से खबर आई- मां नहीं रहीं। 13 साल की मुमताज चुप खड़ी हो गईं और थोड़ी देर बाद डायरेक्टर वी.शांताराम से कहा- 'क्या करूं अन्ना?'मुमताज तुरंत हैदराबाद के लिए रवाना हुईं। जनाजे में शामिल हुईं और अगले दिन ही फिर सेट पर आ गईं। इस पर मुमताज ने रेडियो नशा को दिए इंटरव्यू में कहा था, उस जमाने में कोई मर भी जाए और अगर प्रोड्यूसर का सेट लगा है, तो आपको जाना ही पड़ेगा। आप प्रोड्यूसर को कंगाल नहीं कर सकते, क्योंकि उनके बाद दूसरे प्रोड्यूसर का सेट लगना है।

किस्सा- 3

महमूद ने खूबसूरती देख फिल्म ऑफर की, शशि कपूर ने बी-ग्रेड एक्ट्रेस कहकर ठुकराया

14 साल की उम्र में मुमताज ने फिल्म गहरा दाग में काम किया था। फिल्म में उन्होंने हीरो राजेंद्र कुमार की बहन का रोल किया था।

इसी समय उन्हें 1963 की फिल्म फौलाद में रेसलर दारा सिंह के साथ पहला लीड रोल मिला। दारा सिंह का कद देखकर कोई हीरोइन काम करने के लिए तैयार नहीं थीं, ऐसे में मुमताज को ये रोल दिया गया। जोड़ी हिट रही और फिर मुमताज को दारा सिंह के साथ एक के बाद एक कुल 16 फिल्में मिलीं। इन फिल्मों के अलावा मुमताज ने कई बी-ग्रेड फिल्मों में भी काम किया, हालांकि उन्हें खास पहचान नहीं मिली। मुमताज की बड़ी बहन मलका भी फिल्मों में आईं और कॉमेडियन-एक्टर महमूद के साथ कई फिल्में कीं। एक दिन महमूद काम के सिलसिले में मलका से मिलने पहुंचे, तो उनकी नजर मुमताज पर पड़ी। देखने में बेहद खूबसूरत मुमताज को वो एक टक देखते रहे। जब महमूद को फिल्म प्यार किए जा में शशि कपूर, किशोर कुमार के साथ कास्ट किया गया, तो उन्होंने अपने अपोजिट मुमताज को ही कास्ट किया। हालांकि फिल्म में उनका रोल छोटा था। एक दिन फिल्म की शूटिंग के दौरान महमूद ने शशि कपूर से कहा कि वो अपनी आने वाली फिल्मों में मुमताज को कास्ट करें। शशि कपूर ने तल्ख अंदाज में जवाब दिया, नहीं, मैं उस एक्ट्रेस को कभी अपनी हीरोइन नहीं बनाऊंगा, जिसने दारा सिंह के साथ बी-ग्रेड फिल्म की। किसे पता था कि ये बी-ग्रेड फिल्मों की वो एक्ट्रेस जल्द ही टॉप और हाईएस्ट पेड एक्ट्रेस बन जाएगी।

किस्सा- 4

महमूद की जिद पर दिलीप कुमार की हीरोइन बनीं मुमताज

फिल्म प्यार किए जा में साथ काम करने के बाद महमूद अपनी हर फिल्म में मुमताज को अपोजिट रोल देने लगे। वो भांप चुके थे कि मुमताज में टॉप एक्ट्रेस बनने का हुनर और जज्बा है। वो दूसरे हीरो को भी मुमताज के साथ काम करने की सलाह देते थे। जब महमूद को पता चला कि दिलीप कुमार फिल्म राम और श्याम कर रहे हैं, जिसमें उनका डबल रोल है, तो वो सीधे मुमताज की सिफारिश करने पहुंच गए। तब दिलीप कुमार आरके स्टूडियो में शूट कर रहे थे। महमूद उनके पास गए और कहा- एक नई लड़की है, बहुत टैलेंटेड है, उसके साथ काम कर लीजिए।

दिलीप कुमार ने जवाब दिया- ह्यअभी मैं व्यस्त हूं, लंच ब्रेक में लड़की की फोटो लेकर आना।

महमूद हड़बड़ाहट में एक स्टूडियो गए और मुमताज के गाने की पूरी रील उठा लाए। लंच ब्रेक में उन्होंने दिलीप कुमार को मुमताज की रील दिखाई तो उन्होंने कहा- ह्यायर महमूद, लड़की तो बहुत अच्छी दिखती है, खूबसूरत है, डांस भी करती है, बड़ी प्यारी लड़की है। मैं करूंगा। डबल रोल है, एक वहीदा है, दूसरी मुमताज होगी।

फिल्म राम और श्याम हिट रही और मुमताज को देशभर में पहचान मिल गई।

किस्सा- 5

जीतेंद्र का साथ काम करने से इनकार, डायरेक्टर बोले- हीरोइन नहीं बदलूंगा

फिल्म राम और श्याम रिलीज होने से पहले मुमताज को फिल्म बूंद जो बन गए मोती (1967) में काम मिला। जीतेंद्र और डायरेक्टर वी.शांताराम की बेटी राजश्री लीड रोल में थीं और मुमताज को साइड रोल मिला था। फिल्म की शूटिंग शुरू होने से ठीक पहले राजश्री की शादी तय हो गई और उन्होंने फिल्म छोड़ दी। ऐसे में वी.शांताराम ने मुमताज को ही फिल्म में लीड रोल दिया। जैसे ही ये खबर जीतेंद्र को मिली, तो उन्होंने तुरंत डायरेक्टर को कॉल कर ऐतराज जताया। उन्होंने कहा- ह्यउसको हीरोइन क्यों बनाया, कोई और हीरोइन ढूंढिए। जवाब मिला- हीरोइन तो मुमताज ही होगी, आपको दिक्कत है, तो आप फिल्म छोड़ दो।वो वी.शांताराम ही थे, जिन्होंने जीतेंद्र को हीरो बनाया था, तो जीतेंद्र को मजबूरन फिल्म करनी ही पड़ी।

इसी तरह साल 1969 की फिल्म दो रास्ते में शशि कपूर को कास्ट किया गया। बाद में जब मुमताज की कास्टिंग हुई तो शशि कपूर ने फिल्म छोड़ दी। इस फिल्म में बाद में राजेश खन्ना को साइन किया गया। फिल्म का गाना बिंदिया चमकेगी, चूड़ी खनकेगी काफी हिट हुआ था।

किस्सा-6

अमिताभ के लिए छोड़ दी अपनी मर्सिडीज

अमिताभ बच्चन इंडस्ट्री में नए थे, जब उन्हें मुमताज के साथ फिल्म बंधे हाथ में काम मिला। मुमताज तब काफी पॉपुलर हो चुकी थीं। उनकी कामयाबी का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि जब अमिताभ बच्चन साधारण कार से आते थे, तब मुमताज मर्सिडीज से सेट पर आती थीं। अमिताभ को उनकी कार बहुत पसंद थी। एक दिन उन्होंने साथ काम करने वालों से कहा- मुझे ये कार पसंद है, देखना एक दिन मैं भी मर्सिडीज चलाऊंगा। किसी तरह ये बाद मुमताज के कानों तक पहुंची। उस दिन जब वो शूटिंग पूरी कर निकलीं, तो अमिताभ की कार ले गईं और अपनी वहीं सेट पर छोड़ दी। अमिताभ बाहर आए, तो उन्हें अपनी कार नहीं मिली।

एक माह से बिना पटवारी के चार ग्राम पंचायतें, प्रमाण-पत्र से एग्रीस्टैक तक ठप... वनांचल के ग्रामीणों की बढ़ी परेशानी

ओड़गी, 31 जुलाई 2026 द शूटर। वनांचल और विशेष पिछड़ी जनजाति पंडो बाहुल्य क्षेत्र की चार ग्राम पंचायतें इन दिनों राजस्व व्यवस्था की अनदेखी का खामियाजा भुगत रही हैं। ग्राम पंचायत खोड़, इंजानी, केशर और छतोली बीजो में हल्का पटवारी के स्थानांतरण के बाद एक माह से अधिक समय बीत जाने के बावजूद नए पटवारी ने कार्यभार ग्रहण नहीं किया है। नतीजतन आय, जाति और निवास प्रमाण-पत्र से लेकर सीमांकन, नामांतरण, बंटवारा, किसान पंजीयन तथा एग्रीस्टैक जैसे जरूरी राजस्व कार्य पूरी तरह ठप पड़े हैं। सबसे हैरानी की बात यह है कि क्षेत्र के जनप्रतिनिधियों तक को यह जानकारी नहीं है कि वर्तमान में उनके हल्के का प्रभारी पटवारी कौन है।

इन चारों ग्राम पंचायतों में बड़ी संख्या में आदिवासी और विशेष पिछड़ी जनजाति पंडो समुदाय के लोग निवास करते हैं। शिक्षा, कृषि और शासकीय योजनाओं से जुड़े अधिकांश कार्य राजस्व विभाग पर निर्भर हैं। लेकिन जिम्मेदार अधिकारी की अनुपस्थिति के कारण ग्रामीणों को छोटे-छोटे कार्यों के लिए भी बार-बार तहसील और मुख्यालय के चक्कर लगाने पड़ रहे हैं। इससे उनका समय और पैसा दोनों बर्बाद हो रहे हैं।छतोली बीजो निवासी नरेंद्र गुर्जर ने बताया कि पूर्व पटवारी के स्थानांतरण को एक माह से अधिक हो चुका है, लेकिन अब तक किसी नए पटवारी ने क्षेत्र में जिम्मेदारी नहीं संभाली है। प्रतिदिन किसी न किसी ग्रामीण को प्रमाण-पत्र, सीमांकन, बंटवारा या एग्रीस्टैक से संबंधित कार्य की आवश्यकता पड़ती है, लेकिन अधिकारी के अभाव में सभी काम लंबित हैं।ग्राम पंचायत खोड़ के सरपंच रामशकल सिंह ने बताया कि इस समय किसानों के लिए एग्रीस्टैक का कार्य प्राथमिकता पर चल रहा है। वहीं विद्यार्थियों को प्रवेश, छात्रवृत्ति और अन्य शासकीय योजनाओं का लाभ लेने के लिए आय, जाति और निवास प्रमाण-पत्र की तत्काल आवश्यकता रहती है। पटवारी नहीं होने से किसान, विद्यार्थी और आम ग्रामीण सभी प्रभावित हो रहे हैं, जिससे लोगों में नाराजगी लगातार बढ़ रही है।

ग्रामीणों का कहना है कि वनांचल क्षेत्र होने के कारण पहले ही उन्हें सरकारी सेवाओं तक पहुंचने में काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। ऐसे में यदि हल्का पटवारी भी उपलब्ध न हो तो आम लोगों के जरूरी काम महीनों तक अधर में लटक जाते हैं। सबसे अधिक परेशानी गरीब, आदिवासी और दूरदराज के परिवारों को झेलनी पड़ रही है, जिन्हें हर बार उम्मीद के साथ दफ्तरों के चक्कर लगाने पड़ते हैं, लेकिन समाधान नहीं मिल पा रहा है।चारों ग्राम पंचायतों के ग्रामीणों ने जिला प्रशासन से तत्काल नए हल्का पटवारी की पदस्थापना कर नियमित रूप से क्षेत्र में उपस्थित रहने की व्यवस्था सुनिश्चित करने की मांग की है, ताकि आय, जाति, निवास प्रमाण-पत्र, सीमांकन, नामांतरण, बंटवारा, किसान पंजीयन और एग्रीस्टैक सहित सभी राजस्व कार्य समय पर पूरे हो सकें।

तहसीलदार ने दिया शीघ्र समाधान का भरोसा

इस संबंध में तहसीलदार अमृता सिंह ने बताया कि क्षेत्र के लिए नए पटवारी की व्यवस्था कर ली गई है। संबंधित नोटशीट तैयार कर एसडीएम को भेजी जा रही है और आवश्यक प्रशासनिक प्रक्रिया पूरी होते ही नए पटवारी की पदस्थापना कर दी जाएगी, जिससे ग्रामीणों की लंबित समस्याओं का समाधान हो सके।

हर पात्र हितग्राही तक समय पर पहुंचे योजनाओं का लाभ, महिला एवं बाल विकास विभाग की समीक्षा बैठक में दिए गए अहम निर्देश

सूरजपुर, 31 जुलाई 2026, द शूटर। जिले की महिलाओं, बच्चों और किशोरियों तक शासन की योजनाओं का लाभ प्रभावी ढंग से पहुंचाने के उद्देश्य से शुक्रवार को जिला पंचायत सभा कक्ष में महिला एवं बाल विकास विभाग की समीक्षा बैठक आयोजित हुई। बैठक की अध्यक्षता जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती चन्द्रमणि पैकरा ने की। इस दौरान जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी विजेन्द्र सिंह पाटले, जिला कार्यक्रम अधिकारी शुभम बंसल सहित विभागीय अधिकारी एवं कर्मचारी मौजूद रहे।

बैठक में प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना, मिशन शक्ति, पोषण अभियान, सक्षम आंगनबाड़ी एवं पोषण 2.0, सखी वन स्टॉप सेंटर सहित विभिन्न योजनाओं की समीक्षा करते हुए उनके पारदर्शी और गुणवत्तापूर्ण क्रियान्वयन के निर्देश दिए गए। आंगनबाड़ी केंद्रों की नियमित मॉनिटरिंग, पोषण ट्रैकर एप में त्रुटिरहित प्रविष्टि, लंबित प्रकरणों के शीघ्र निराकरण और पात्र हितग्राहियों को समयबद्ध लाभ उपलब्ध कराने पर विशेष जोर दिया गया।समीक्षा के दौरान कुपोषित बच्चों, गर्भवती एवं धात्री माताओं की नियमित निगरानी, क्षेत्रीय निरीक्षण और योजनाओं के प्रभावी संचालन के निर्देश दिए गए। साथ ही बाल विवाह प्रतिषेध अधिनियम, 2006 के प्रावधानों की जानकारी देते हुए अधिकारियों से जनजागरूकता बढ़ाने और बाल विवाह की सूचना मिलने पर तत्काल कार्रवाई सुनिश्चित करने को कहा गया। बैठक के अंत में सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से टीम भावना के साथ योजनाओं का प्रभावी, पारदर्शी और जनहितकारी क्रियान्वयन सुनिश्चित करने का आह्वान किया गया।

समरसता संकल्प अभियान के तहत गुरु पूर्णिमा पर भाजपा समलाया मंडल ने 650 दीप प्रज्ज्वलित कर मनाई संत गुरु रविदास महाराज की 650वीं जयंती

अम्बिकापुर।द शूटर। भारतीय जनता पार्टी द्वारा संचालित समरसता संकल्प अभियान के अंतर्गत संत शिरोमणि श्री गुरु रविदास महाराज की 650वीं जयंती के अवसर पर गुरु पूर्णिमा के पावन पर्व पर भाजपा समलाया मंडल द्वारा माँ समलाया मंदिर में श्रद्धा एवं भक्ति के साथ 650 दीपों का प्रज्ज्वलन किया गया। इस अवसर पर संत गुरु रविदास महाराज के चित्र पर पुष्प अर्पित कर विधिवत पूजन-अर्चन किया गया तथा सामाजिक समरसता, समानता और बंधुत्व का संकल्प लिया गया।

कार्यक्रम के अंतर्गत समलाया मंडल के विभिन्न मोर्चों के पदाधिकारियों एवं कार्यकताओं ने मंडल क्षेत्र के अन्य मंदिरों में भी दीप प्रज्ज्वलित कर गुरु रविदास महाराज के आदर्शों को जन-जन तक पहुंचाने का संदेश दिया।

इस अवसर पर भाजपा के प्रदेश महामंत्री अखिलेश सोनी, भाजपा सरगुजा जिलाध्यक्ष भारत सिंह सिसोदिया, हरपाल सिंह भामरा, नगर निगम सभापति हरिंदर सिंह टिन्नी, अंबिकेश केशरी, विद्यानंद मिश्रा, मधुसूदन शुक्ला, भाजपा जिला महामंत्री विनोद हर्ष, श्रीमती अरुणा सिंह, श्रीमती शुभांगी बिहाड़े, प्रियंका चौबे, वैभव सिंह देव, दीपक सिंह तोमर, नगर महामंत्री अजय सोनी, अभिषेक सिंह, सर्वेश तिवारी, शैलेन्द्र शर्मा, आयुष दुबे, नीलकंठ सोनवानी, आलोक दास, सत्यम साहू, निशांत गुप्ता, विशेष केसरवानी, नितिन गुप्ता, दीपक अग्रवाल, श्रीमती प्रिया सिंह, रविकांत, शशिकांत जायसवाल, श्रीधर केशरी, ईशू केसरवानी सहित भाजपा समलाया मंडल के ज्येष्ठ-श्रेष्ठ पदाधिकारी, सभी मोर्चों के पदाधिकारी एवं बड़ी संख्या में कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

कार्यक्रम में उपस्थित सभी जनप्रतिनिधियों एवं कार्यकताओं ने संत गुरु रविदास महाराज के बताए समरसता, सामाजिक समानता एवं मानवता के मार्ग पर चलने का संकल्प लेते हुए समाज में सद्भाव और एकता को सुदृढ़ बनाने का संदेश दिया।

अनुशासन, संवेदनशीलता और जनविश्वास पर जोर : डीआईजी एवं एसएसपी आईपीएस राजेश अग्रवाल ने किया रक्षित केंद्र का वार्षिक निरीक्षण

अम्बिकापुर, 31 जुलाई 2026, द शूटर। पुलिस केवल कानून लागू करने वाली संस्था ही नहीं, बल्कि जनता के विश्वास की सबसे मजबूत कड़ी भी है। इसी सोच को व्यवहार में उतारने के उद्देश्य से डीआईजी एवं एसएसपी सरगुजा आईपीएस राजेश अग्रवाल ने शुक्रवार को रक्षित केंद्र अंबिकापुर का वार्षिक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने पुलिस बल में अनुशासन, कार्यकुशलता और संवेदनशील पुलिसिंग को सर्वोच्च प्राथमिकता बताते हुए अधिकारियों एवं कर्मचारियों को आमजन के साथ मानवीय व्यवहार अपनाने के निर्देश दिए।

निरीक्षण की शुरूआत परेड की सलामी लेने से हुई। इसके बाद परेड का निरीक्षण, मार्च पास्ट और स्कॉट ड्रिल कराई गई। इस दौरान अधिकारियों एवं जवानों के टर्नआउट, अनुशासन और प्रदर्शन का बारीकी से मूल्यांकन किया गया। उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले जवानों को नगद पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया, जिससे उनका उत्साहवर्धन हो सके।इसके बाद डीआईजी एवं एसएसपी ने रक्षित केंद्र की वाहन शाखा, आर्म्स शाखा, स्टोर शाखा और पुलिस यूनिट बैंक का विस्तृत निरीक्षण किया। शासकीय वाहनों की स्थिति, रखरखाव, लॉग बुक और अभिलेखों का परीक्षण करते हुए उन्होंने सभी वाहनों को हमेशा बेहतर स्थिति में रखने तथा रिकॉर्ड अद्यतन रखने के निर्देश दिए। बीपी वाहन और जैमर वाहन सहित अन्य आवश्यक वाहनों के नियमित रखरखाव पर भी विशेष जोर दिया गया।आर्म्स शाखा में हथियारों की सुरक्षा, नियमित साफ-सफाई और रखरखाव सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए, जबकि स्टोर शाखा में आवश्यक सामग्री समय पर जवानों तक पहुंचाने तथा उपकरणों की समय-समय पर मरम्मत कराने पर बल दिया गया। पुलिस यूनिट बैंक के माध्यम से अधिकारी-कर्मचारियों के कल्याण से जुड़ी योजनाओं को और प्रभावी ढंग से संचालित करने के भी निर्देश दिए गए।निरीक्षण के दौरान डीआईजी एवं एसएसपी ने अधिकारियों और कर्मचारियों से सीधे संवाद कर उनकी समस्याएं भी सुनीं तथा उनके त्वरित निराकरण के लिए संबंधित अधिकारियों को आवश्यक निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि पुलिस की असली पहचान जनता के बीच उसके व्यवहार और संवेदनशील कार्यशैली से बनती है, इसलिए प्रत्येक अधिकारी और कर्मचारी को जनविश्वास कायम रखने के लिए पूरी निष्ठा और जिम्मेदारी के साथ कार्य करना चाहिए।

इस अवसर पर पुलिस मुख्यालय से जिले को प्राप्त नए शासकीय वाहन का विधिवत पूजा-अर्चना के साथ शुभारंभ भी किया गया तथा उसके बेहतर रखरखाव के निर्देश दिए गए।वार्षिक निरीक्षण के दौरान अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक अमोलक सिंह ढिल्लो, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक रितेश चौधरी, एसडीओपी ग्रामीण राकेश बघेल, उप पुलिस अधीक्षक अमृत कुजूर, रक्षित निरीक्षक तृप्ति सिंह राजपूत, प्रशिक्षु सूबेदार पेमिन वर्मा, प्रशिक्षु सूबेदार गुलशन चंद्रा, रीडर अमित पाण्डेय सहित लगभग 160 अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

नवपदस्थ पुलिस कप्तान आईपीएस योगेश कुमार पटेल की दो टूक, अनुशासन से समझौता नहीं : 129 दिनों तक गायब रहने वाला आरक्षक सेवा से बर्खास्त

सूरजपुर, 31 जुलाई 2026 द शूटर। नवपदस्थ पुलिस अधीक्षक आईपीएस योगेश कुमार पटेल ने साफ कर दिया है कि जिला पुलिस में अनुशासन से किसी भी प्रकार का समझौता नहीं किया जाएगा। पुलिस महकमे में अनुशासन बरकरार रखने की दिशा में सख्त रुख अपनाते हुए उन्होंने 129 दिनों तक बिना अनुमति और बिना विभाग को विधिवत सूचना दिए ड्यूटी से अनुपस्थित रहने वाले आरक्षक अमरदीप विश्वकर्मा को विभागीय जांच में आरोप सिद्ध होने के बाद सेवा से पृथक कर दिया है। इस कार्रवाई को पुलिस विभाग में जवाबदेही और कर्तव्यनिष्ठा सुनिश्चित करने की दिशा में एक स्पष्ट और कड़ा संदेश माना जा रहा है।जानकारी के अनुसार आरक्षक अमरदीप विश्वकर्मा की ड्यूटी 25 जून 2025 को बंदी पेशी के लिए लगाई गई थी, लेकिन वह उसी दिन से बिना किसी सक्षम अनुमति के ड्यूटी से अनुपस्थित हो गया। इसके बाद वह 25 जून 2025 से 31 अक्टूबर 2025 तक लगातार 129 दिनों तक ड्यूटी पर नहीं लौटा। इस दौरान विभाग द्वारा कई बार नोटिस जारी कर स्पष्टीकरण मांगा गया और ड्यूटी पर उपस्थित होने के निर्देश दिए गए, लेकिन उसने विभागीय आदेशों की अनदेखी की।मामले की विभागीय जांच में आरक्षक को अपना पक्ष रखने का पूरा अवसर दिया गया। उसने उपचार संबंधी कुछ दस्तावेज प्रस्तुत किए, लेकिन जांच में यह स्पष्ट हुआ कि लंबी अनुपस्थिति के दौरान उसने

न तो विभाग को नियमानुसार लिखित सूचना दी और न ही अवकाश स्वीकृति के लिए आवेदन प्रस्तुत किया। पुलिस जैसे अनुशासित बल में इस प्रकार की लापरवाही को गंभीर अनुशासनहीनता माना गया।जांच के दौरान उसके पूर्व सेवा रिकॉर्ड का भी परीक्षण किया गया, जिसमें सामने आया कि वह पहले भी कई बार अनाधिकृत अनुपस्थिति के मामलों में विभागीय कार्रवाई झेल चुका है। उसके विरुद्ध अवैतनिक अवधि घोषित करने, वेतनवृद्धि रोकने सहित कई छोटी और बड़ी सजाएं दी जा चुकी थीं, लेकिन उसके आचरण में कोई अपेक्षित सुधार नहीं आया। विभागीय अभिलेखों के आधार पर यह भी माना गया कि उसके एक अनुशासित पुलिसकर्मी के रूप में कार्य करने की संभावना अत्यंत कम रह गई है।सभी साक्ष्यों, दस्तावेजों और विभागीय जांच में आरोप प्रमाणित पाए जाने के बाद पुलिस अधीक्षक आईपीएस योगेश कुमार पटेल ने 31 जुलाई 2026 को आरक्षक अमरदीप विश्वकर्मा को सेवा से पृथक करने का आदेश जारी किया। साथ ही 25 जून 2025 से 31 अक्टूबर 2025 तक की 129 दिनों की अनुपस्थिति अवधि को छत्तीसगढ़ पुलिस नियमों के तहत कार्य नहीं, वेतन नहीं के सिद्धांत के अनुसार अवैतनिक घोषित किया गया। वहीं दूसरी तरफ पुलिस अधीक्षक आईपीएस योगेश कुमार पटेल ने कहा कि पुलिस विभाग में प्रत्येक अधिकारी और कर्मचारी से कर्तव्यनिष्ठा, अनुशासन और जवाबदेही की अपेक्षा की जाती है। विभागीय नियमों का उल्लंघन, अनाधिकृत अनुपस्थिति और कर्तव्य के प्रति लापरवाही किसी भी स्थिति में स्वीकार्य नहीं है। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा कि सूरजपुर पुलिस में अनुशासनहीनता किसी भी कीमत पर बर्दाश्त नहीं की जाएगी और भविष्य में भी ऐसे मामलों में निष्पक्ष, पारदर्शी एवं नियमानुसार कठोर कार्रवाई लगातार जारी रहेगी, ताकि पुलिस बल की कार्यकुशलता और आमजन का विश्वास दोनों मजबूत बने रहें।

प्रेमी से संपर्क न होने पर युवती टावर पर चढ़ी घंटों मशक्कत के बाद पुलिस ने सुरक्षित उतारा

ओड़गी, 31 जुलाई 2026, द शूटर। चांदनी बिहारपुर थाना परिसर में शुक्रवार को उस समय हड़कंप मच गया, जब अपने प्रेमी से लंबे समय से संपर्क नहीं होने से परेशान एक युवती अचानक थाना परिसर स्थित वायरलेस टावर पर चढ़ गई। वह अपने प्रेमी को मौके पर बुलाने की मांग पर अड़ गई, जिससे पुलिस और परिजनों की चिंता बढ़ गई।जानकारी के अनुसार, युवती ने पहले पुलिस अधीक्षक कार्यालय में शिकायत दर्ज कराई थी। जांच के लिए उसे चांदनी बिहारपुर थाने बुलाया गया, जहां पूछताछ के दौरान वह

अचानक टावर पर चढ़ गई। सूचना मिलते ही पुलिस ने सुरक्षा व्यवस्था संभाली और घंटों तक समझाइश, काउंसिलिंग तथा परिजनों के सहयोग से उसे सुरक्षित नीचे उतार लिया।थाना प्रभारी राम प्रताप साहू ने बताया कि युवती की शिकायत की जांच की जा रही है। पुलिस ने उसे सुरक्षित परिजनों के सुपुर्द कर दिया है और मामले में नियमानुसार आगे की कार्रवाई की जा रही है। घटना के दौरान थाना परिसर के बाहर लोगों की भीड़ जुट गई, लेकिन पुलिस की सूझबूझ से बिना किसी अप्रिय घटना के स्थिति पर काबू पा लिया गया।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक- रूपेश दुबे द्वारा आर्यन ऑफसेट प्रिंटिंग प्रेस, पॉवर हाउस रोड नमना कला अम्बिकापुर, सरगुजा, छ0ग0 से मुद्रित एवं मेन रोड प्रतापपुर, खोरमा, जिला- सूरजपुर, छ0ग0 से प्रकाशित। संपादक- प्रवीण दुबे* (* समाचार चयन के लिए जिम्मेदार)। फोन- 07777271215